ओ३म्

वर्ष : 9 अंक : 1 अप्रैल 2019 - सितम्बर 2019

वेद ईश्वरीय वाणी

अर्द्ध-वार्षिक

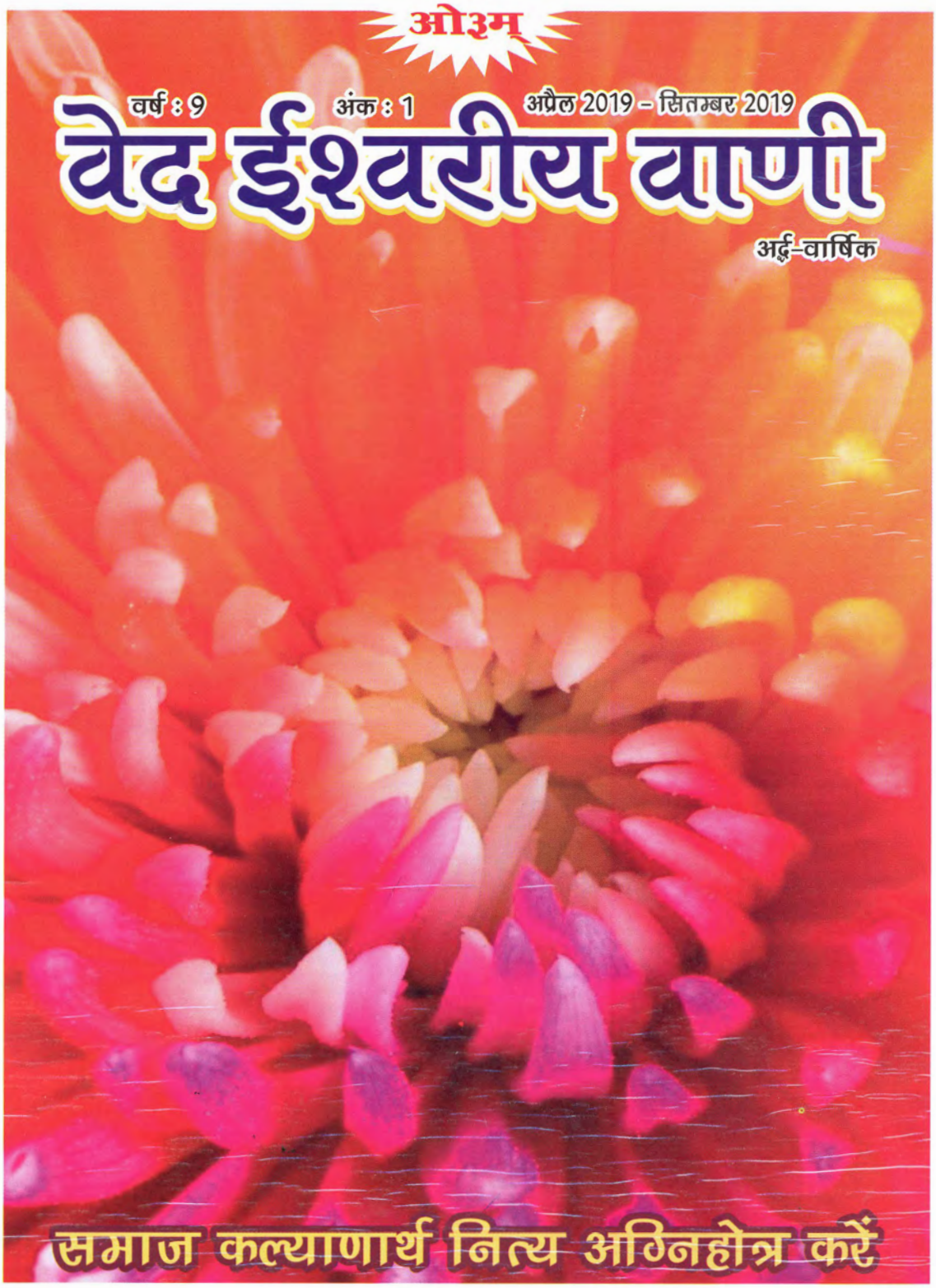

समाज कल्याणार्थ नित्य अग्निहोत्र करें

P.O. : Regd. No.: JK-432/17-19 RNI No. : JKBIL/2011/38654 ₹ 10

VED MANDIR PRAKASHAN

NEW BOOKS RELEASED

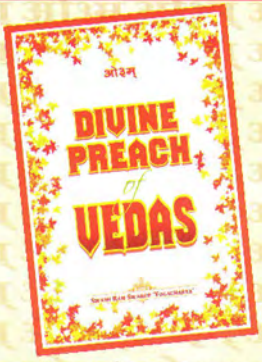

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य' **''DIVINE PREACH OF VEDAS''** पुस्तक का विमोचन करते हुए।

श्रीमती एवं श्री एस.पी.वैध (ट्रांस्पोर्ट कमीश्नर, जे एंड के), स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य' एवं
श्रीमती कृष्णा गुप्ता (अध्यक्ष, आर्य समाज मन्दिर, गांधी नगर, जम्मू) ***''रसना द्वारे''*** पुस्तक का विमोचन करते हुए।

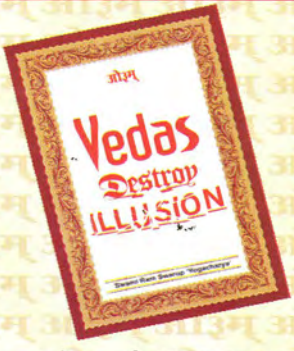

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य' **''VEDAS DESTROY ILLUSION''** पुस्तक का विमोचन करते हुए।

PT. Saarindo Utama Sejati

SRS Saarindo

Apparel Sourcing, Merchandising
& Manufacturing Services

PT. Saarindo Utama Sejati,
Gedung Jam Krindo, 9rd Floor,
Jl.Angkasa Block B-9 Kav-6
Kemayoran, Jakarta 10610

Jakarta, Indonesia

Tel : +6221 65868461
Fax : +6221 65868425
Email : saar@indosat.net.id

HAPPY BAISAKHI

May The Eternal Knowledge of Vedas Reach & Enlighten the Minds of All The Human Beings

HAPPY BAISAKHI

SANDEEP KUMAR & BROS

® RISHABH

makes life easy

DEALS IN:- ALL CASAROL SET, TRAY SET,JAR RANGE, TIFFEN SET AND ALL HOUSEHOLD PLASTIC PRODUCTS AT FACTORY RATE . NEAR ADDIDAS SHOWROOM, KUNJWANI, JAMMU (J&K) .

CONTACT NO. -: JATIN -9070928888.

DL&CO.

DEALS IN:- BARDANA , SUTLI,PLASTIC HOUSEHOLD PRODUCTS, BAREELS AND ALL KIND OF PLASTIC FURNITURE AT WHOLESALE PRICE .

H/O- NEAR POLICE POST, VIKRAM CHOWNK, JAMMU

B/O- OPP. FAIRDEAL PETROL PUMP, GANGYAL, JAMMU (J&K)

CONTACT NO.-: SANDEEP-9419198320

SUNIL-9419123320 *VISHAL-9419196320*

वेद ईश्वरीय वाणी

वर्ष : 9 अंक: 1 अप्रैल 2019 – सितम्बर 2019 अर्द्ध–वार्षिक

ब्रह्म अनुभूति का आनन्द

ओ३म्

''प्र वाता इव दोधत उन्मा पीता अयंसत।
कुवित्सोमस्यापामिति।।''

ओ३म्

(ऋग्वेद मन्त्र 10/119/2)

(वाताः इव) वायु के समान ***(प्रदोधतः)*** कंपाते हुए अर्थात् झुलाते हुए परमात्मा की अनुभूति का आनन्द रस योगी को ***(उद् अयंसत)*** ऊँचे ले जाते हैं क्योंकि ***(कुवित्सोमस्यापामिति)*** मैंने परमात्मा की अनुभूति के आनन्द रस का पान किया है।

भावार्थः वेदाध्ययन एवं अष्टाँग योग आदि की साधना के पश्चात् जब योगी समाधि में ब्रह्म के आनन्द की अनुभूति करता है तो वह अनुभूति परम आनन्ददायक होती है। वैसा आनन्द पृथिवी पर कहीं नहीं है। अतः परम आनन्द में डूबे योगी को सांसारिक वस्तुओं की इच्छा नहीं रहती। वह तो परमात्मा के आनन्द रस के पान से पूर्णतः तृप्त हुआ, अन्य आनन्दों सहित कभी–कभी ऐसा भी अनुभव करता है कि जैसे वह योगी वायु के झोंकों की भांति वायु में झूम रहा है। उसे आनन्द रस झुलाते हैं। वस्तुतः मनुष्य के शरीर को वेदों ने ***''पुण्डरीकं''*** कहकर अर्थात् पुण्यवान् वैदिक कर्म/साधना करके और इस प्रकार क्लेशों का नाश करके ब्रह्म अनुभूति के आनन्द में झूमने के लिए दिया है। दुःख है कि आज मनुष्य इस मार्ग को भुलाकर, दुःखों के सागर में थपेड़े खा रहा है।

EXPERIENCE OF DIVINE PLEASURE

After following vedas and doing hard practice of Ashtang yog philosophy, when a Yogi attains Samadhi and thus experiences the utmost divine pleasure, he like several other divine pleasures, also experiences as if he is swinging in the air. The said pleasure is not seen in the universe. He needs not to fulfill any worldly desire, being indulged in divine pleasure. Infact, the human body has been addressed in vedas as Pundareekam, that is, the source to discharge moral duties and adopting vedic path, so that the soul attains final liberation. Therefore it is sad that nowadays mostly the people have forgotten the eternal knowledge of vedas and hence the problem.

वेद ईश्वरीय वाणी

मुद्रक, स्वामी एवं प्रकाशक: राज कुमार गुप्ता

संपादक: स्वामी राम स्वरूप 'योगाचार्य' (01892236107)

सह संपादक: साध्वी गीतांजली (01892236107)

उप-संपादक: सुप्रिया गन्दोत्रा (9906092521)

''वेद ईश्वरीय वाणी''

प्रकाशन: शिवा एन्कलेव, लेन नं. -3, रूप नगर, जम्मू - 180013 (जम्मू व कश्मीर)

डी.डी. ग्रिप्रोग्राफिक्स

3-एकता आश्रम न्यू रिंहाड़ी, जम्मू -180005 (जम्मू व कश्मीर) से मुद्रित

ओ३म्

विषयानुक्रमणिका

ओ३म्

• ब्रह्म अनुभूति का आनन्द - ऋग्वेद मन्त्र 10/119/2			1
• सम्पादकीय (विश्व में अशांति का दौर)	-	स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'	3
• Death An inevitable Truth (A Tribute)	-	Sadhvi Geetanjali	9
• गुरु-शिष्य संवाद	-	स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'	17
• मानव जीवन का उद्देश्य	-	ऋचा कौशिक	25
• Correspondence between Swami ji & S. Khushwant Singh ji			28
• स्वामी रामस्वरूप जी के वैदिक प्रवचनों..	-	बिपिन बाडेका	32
• पौर्णमासी और अमावस्या	-		32
• Constructive not Destructive Criticism	-	Sapna	33
• Medical Science in Atharvaved	-		35
• विद्वानों का संग	-	अंजना दीवान	36
• वृद्ध की सेवा ही ब्रह्मोपासना	-	डॉ. प्रवीण कुमार शर्मा	42
• Truth & Illusion	-	Swami Ram Swarup 'Yogacharya'	49
• भस्मान्तम् शरीरम्	-	पी.आर.मेहरा	51
• वेद मार्ग पर चलकर चित्त के कुसंस्कारों..	-	वीना राज	52
• Woman of Valor	-	Seema	56
• बात जो दिल को छू गई	-	शीतल गुप्ता	60
• वज्रासन	-	स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'	62
• Saffron	-	Sugandh 'Sudhi'	63
• Subscription Form			

NOTE : Writers are responsible for their own articles

वेद निष्पक्ष ईश्वरीय वाणी हैं

विश्व में अशांति का दौर

यह सर्वविदित है कि विश्व में आज चहुँ दिशा अधिकतर अशांति एवं हिंसा आदि का बोल बाला है। फलस्वरूप विश्व में तनाव है और भाईचारे में अत्याधिक कमी का आभास भी प्रत्यक्ष है। इस कुवृत्ति का अवलोकन साक्षात् इस तनिक से तथ्य से होता है कि भारत–पाकिस्तान एवं चीन की सीमा पर अशांति और विशेषकर भारत–पाकिस्तान सीमा पर नित्य की गोलाबारी से दोनों तरफ के जवानों एवं सिविल लोगों का शहीद होना, सीरिया, अफगानिस्तान आदि देशों में नित्य बम्ब एवं शस्त्रों आदि द्वारा फौज एवं आतंकवादियों द्वारा मासूम जनता पर प्रहार, आई.एस.आई का उग्रवाद, इज़राइल और फिलस्तीन की सीमा का विवाद एवं एक–दूसरे पर शस्त्रों से हमला करके बेकसूर, मासूम जनता का भी खून–खराबा एवं उत्पीड़न। तथा इस पर भी सबसे बड़ा विश्व का दुर्भाग्य यह है कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प तथा रूस के राष्ट्रपति पूतिन में अनबन, इसके अतिरिक्त विश्व को अशांति प्रदान करने के लिए उत्तर– कोरिया के राष्ट्रपति किम जोंग की समय–समय पर अमेरिका आदि से व्यर्थ में युद्ध छेड़ने की धमकी। अन्य देशों की जनता भी किसी परेशानी एवं अशांति आदि से बची हुई हों, ऐसा सम्भव नहीं। तो क्या समस्त

भूमि पर मानव का प्रात: काल से भय के वातावरण में जीना, उठना–बैठना, खाना–पीना और रात्रि में भयावह स्थिति में सो जाना, यह सबकुछ नरक में दुखों से व्याप्त जीवन व्यतीत करना नहीं है, जहाँ मानव–जाति को सुख–शांति, भाईचारे आदि से रहने का अवसर समाप्त प्राय: है।

हम भारतवर्ष की स्थिति और जनता की स्थिति पर नज़र डालें तो ज्ञात होता है कि देश की जनता भी विस्मित एवं प्राय: भययुक्त वातावरण में जीवन व्यतीत कर रही है। जनता प्राय: पाकिस्तान एवं चीन के रुख से पीड़ित है, इसमें कश्मीर समस्या विशेष है। यदि हम ऊपरलिखित स्थिति को शास्त्रों की दृष्टि से देखें तो ***वैशेषिक शास्त्र सूत्र 4/1/3*** का उपदेश है–

''कारणभावात्कार्यभाव:''

अर्थात् कारण के होने से ही कार्य होता है।

सूत्र के रचनाकार ऋषि कणाद का भाव है कि कारण जब सद्रूप में विद्यमान रहता है तभी उससे किसी कार्य के उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। अत: गहन विचार का विषय यह है कि सृष्टि रचना से लेकर महाभारत काल तक (लगभग एक अरब, 96 करोड़, 8 लाख वर्ष तक) विश्व में किस कारण (आधार पर) स्थायी शांति बनी रही और प्रत्येक राजा ने प्रजा का पुत्रवत् पालन किया। विद्वानों का गहन मनन–चिन्तन है कि इतने वर्ष विश्व में शांति स्थापित रहने का कारण केवल घर–घर में तथा प्रत्येक चक्रवर्ती राजा में वेद विद्या का अध्ययन एवं आचरण रहा जो कि लगभग 5,500 वर्ष पहले (महाभारत काल पश्चात्) समाप्त प्राय: हो गया और फलस्वरूप चहुँ ओर अशांति और विकार आदि फैलते चले गए। अत: पिछले युगों में शांति स्थापित होने का

कारण केवल घर–घर में एवं राजा तथा उसके मन्त्रियों में वेद विद्या का बोध होना, उसपर आचरण होना था एवं इस वेद विद्या पर आचरण का कार्य जो था, वह विश्व में शांति, भाईचारा एवं सुखमय, दीर्घायु आदि अनेक गुणों का जनता में स्थापित होना था। इन सबका प्रमाण महाभारत, वाल्मीकि रामायण एवं अन्य ऋषि प्रणीत ग्रन्थों में है और इन ग्रन्थों का, दुर्भाग्यवश, आज विश्व स्तर पर जनता अध्ययन नहीं करती। अत: अविद्याग्रस्त होने का कारण वेद आदि ग्रन्थों का अध्ययन ना करना है। आज हम बड़े गर्व से कहते हैं कि हमारा भारतवर्ष ***''विश्वगुरु''*** एवं ***''सोने की चिड़िया''*** था। इस सत्य की भी खोज करने से यही ज्ञात होता है कि विश्व गुरु एवं सोने की चिड़िया होने का कारण भारतवर्ष में घर–घर वेद विद्या का प्रचार था। नालंदा एवं तक्षशिला आदि विश्वविद्यालयों में विश्व भर के विद्यार्थी वेद विद्या ग्रहण करने आते थे। आज हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुए लगभग सत्तर वर्ष हो चुके हैं, देश में कार्य भी हुआ है, जनता को अन्न–धन आदि का लाभ भी अनदेखा नही किया जा सकता, परन्तु विश्व का दुर्भाग्य यह है कि जिस कारण (घर–घर में वेद विद्या होने के कारण) विश्व में जो सुख–शांति, भाईचारा, निरोगता, दीर्घायु आदि का सुख था, उस कारण को अनदेखा करके मनुष्य ने भौतिकवाद और इन्द्रियों के सुख में अपनी मनोवृत्ति लगा दी है। बस यहीं से मज़हबी लड़ाइयाँ, परमाणु युद्ध आदि, नफरत एवं अन्य सैंकड़ों बुराइयाँ उत्पन्न होती चली गईं जो कि वैदिक काल में एक भी नहीं थी। वर्तमान में अन्य देशों सहित भारतवर्ष की जनता में भी आज अशांति, भय आदि समस्या के साथ–साथ नारी–अपमान, दलितों पर अत्याचार,

जातिवाद, उग्रवाद, अन्धविश्वास, बेरोज़गारी, धनवान् का धनवान् होते जाना और निर्धन का निर्धन बने रहना, जनता में नफरत की लहर, धर्म के नाम पर दंगे–फसाद एवं प्राय: राजनेताओं का अहम् आदि अनेक कार्य रूप समस्याएँ दृष्टिगोचर हैं। परन्तु कभी भी भारतवर्ष अथवा विश्व के किसी भी अन्य नेता ने इन समस्याओं के उठने के कारण की खोज करने का प्रयास नहीं किया। केवल स्वयं की बुद्धिबल पर शांति स्थापना के उपाय खोजे जो कि पिछले 5,500 वर्षों से शत–प्रतिशत विफल रहे हैं। इसमें युद्ध रोकने के लिए U.N.O की स्थापना विशेष है जो कभी भी, कोई भी युद्ध नहीं रोक सकी। अत: विश्व स्तर पर नेताओं द्वारा सभा का आयोजन करके विश्व में अशांति आदि की उत्पत्ति का कारण खोजने का प्रयास करना परमावश्यक है। ऊपरलिखित एक कटु सत्य यह भी अवश्य है कि पिछले युगों में महाभारत काल तक स्थिर शांति एवं सुख, निरोगता आदि रहने का कारण घर–घर में चारों वेदों की विद्या का अध्ययन एवं वर्तमान की अशांतियुक्त परिस्थिति का गहन अध्ययन करके यह ज्ञात होता है कि जब सम्पूर्ण विश्व में पिछले लगभग एक अरब, 96 करोड़ वर्षों तक अर्थात् महाभारत काल तक सर्वत्र शांति का वातावरण रहा, तब क्या कारण है कि महाभारत काल के पश्चात लगभग 5,500 वर्षों के भीतर जनता में अशांति, युद्ध, भय आदि का वातावरण उठ खड़ा हुआ।

इस विषय में हमारे ऋषि–प्रणीत ग्रन्थों में जो दो ग्रन्थ अर्थात् महाभारत ग्रन्थ एवं वाल्मीकि रामायण हैं, वे साक्ष्य देते हैं कि सृष्टि रचना से लेकर महाभारत काल तक केवल वैदिक काल रहा, वैदिक विद्या घर–घर में होने के कारण और वैदिक विद्या के

आधार पर पृथिवी का केवल एक ही सम्राट हुआ करता था।

इन सम्राटों में पृथिवी के प्रथम सम्राट मनु, पश्चात् क्षिप्त, विक्षिप्त, ययाति राजा, अष्टक राजा, उरु, पुरु, हरिश्चन्द्र, अज, दशरथ, श्री राम एवं पाण्डवों में युधिष्ठिर राजा का नाम उल्लेखनीय है। उक्त ग्रन्थों का यदि ध्यान से मनन किया जाए तो ज्ञान होता है कि हम सृष्टि को देखकर, ***ऋषि पतांजलि के योग शास्त्र सूत्र 1/7*** के अनुसार प्रथम सर्वशक्तिमान्, ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करें और पूर्णत: जान लें कि यह सृष्टि ईश्वर द्वारा रची गई है। पुन: महाभारत एवं वाल्मीकि रामायण आदि सद्ग्रन्थों के इस निष्कर्ष को समझें कि पृथिवी का संविधान चारों वेद ही हैं जो प्रत्येक सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से उत्पन्न होते हैं। उदाहरणार्थ, वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धा काण्ड, सर्ग तेरह में जब बाली ने श्रीराम से प्रश्न किया कि मुझ निर्दोष को तुमने क्यों मारा? उत्तर में श्रीराम जी ने कहा– ***''केवल इक्ष्वाकु–वंशियों को ही अखिल भूमण्डल में जितने पशु–पक्षी और मनुष्य रहते हैं, उन सबको दण्ड देने अथवा उनपर अनुग्रह करने का अधिकार है।''*** (श्रीराम भरत आदि चारों भाई इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए थे और उस समय भरत पृथिवी के चक्रवर्ती राजा थे।)

नीति, नम्रता, स्थिरता, सत्य और पराक्रम जिसमें विद्यमान हों, जो देश–कालवित् हो, वही राजा होने योग्य है। राजसिंह, धर्मवत्सल महाराज भरत के राज्य शासन में किस मनुष्य में सामर्थ्य है जो धर्मविरुद्ध कोई कर्म कर सके?''

यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति ना होगी कि ***मनु स्मृति श्लोक 2/6*** एवं ***भगवद्गीता श्लोक 3/15*** में स्पष्ट किया है कि

धर्म अर्थात् कर्तव्य–कर्मों का उदय (उपदेश) चारों वेदों में है, अन्य कही नहीं। यहाँ श्रीराम जी का ***''धर्मविरुद्ध कर्म न करने''*** का यही भाव है कि उनके राज्य में वेद विरुद्ध कर्म करने की किसी की सामर्थ्य नहीं है। विपरीत में आज चहुँ दिश वेद विरुद्ध कर्म करने का बोल–बाला होने के कारण दसों दिशाओं में अशांति एवं भयभीत वातावरण आदि से जनता दु:खी है।

सारांश यह है कि मनुष्य भगवद्गीता भी पढ़ लेते हैं और मनुस्मृति आदि अन्य ग्रन्थ भी पढ़ लेते हैं परन्तु परंपरागत वैदिक विद्या का अध्ययन ना करने के कारण धर्म–कर्म आदि विषयों को समझना, उनकी बुद्धि से परे की बात हो जाती है। आज या भविष्य में भी अशांति स्थापित होने का कारण वेद विद्या का अध्ययन ना करके सुविधानुसार स्वयंनिर्मित (मनुष्य निर्मित) मार्गों पर चलना है।

विश्व के बुद्धिजीवियों से यही उम्मीद है कि वे प्रथम वेद विद्या के अस्तित्व को समझने के लिए विश्व स्तर पर प्रश्नोत्तरी करें और इससे सत्य को स्थापित करें कि वेद ईश्वरीय वाणी है और तत्पश्चात् वेदों के आदेश–उपदेश को आचरण में लाएँ, विद्वानों का आदर करें, वेद–विरुद्ध कर्म करने वाले दुष्टों को राजा–सरकार दण्डित करे और इस प्रकार विश्व स्तर पर शांति की स्थापना हो, जैसे कि पहले युगों में वेदों पर आधारित सुख और शांति स्थापित थी।

आओ पुनः हम वेदों की ओर लौटें।

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'
मुख्य सम्पादक
वेद मन्दिर, योल (हि.प्र.)

Death

An inevitable Truth (A Tribute)

Sadhvi Geetanjali
Ved Mandir, Yol.

"They are not dead who live in the hearts they leave behind."

..... An ode to someone somewhere .....

When the ruthless clutches of death snatch away our beloveds, we may try as hard as we can, but become helpless witnessing the precious fingers slipping away from our hands. Mind boggles at the knowledge that soul is immortal and body destructible but heart at this crucial time refuses to accept any logic and falls deep into the sea of sorrows. We ache and pine for the deceased loved one, who leaves us with deep inner loneliness and sense of despair. How to counter this enemy which steals away all our sensibilities? I feel that this may be due to the love with equal heart combined.

Death creates curiosity in our minds and what mind cannot comprehend, it either discards or worships. Before proceeding with this sensitive issue, may I also have the honour to express my heart felt gratitude towards ***His Holiness Swami Ram Swarupji "Yogacharya",*** whose divine guidance and deep vedic knowledge has been indispensable for understanding the aspect of ***death in the light of Vedas.*** The universe created by wonderful God is wonderful in innumerable ways. However, the advent of soul on earth, his (soul's) stay in human-body for a definite time-period and facing death again is a deep and serious issue which requires profound thinking. In Mahabharat, Van parv, ***yaksh asked Yudhishthir-***

"Kim ashcharyam?"

i.e. What is the greatest wonder of the world? Yudhishthir replied-

"Ahanyahani bhootani gachchanteeh yamaalayam,
Sheshahe sthavarmichchanti kimashcharyamtaha param"

i.e. daily, people see dead bodies being burnt on pyre but the rest of the people who are alive still desire to live forever. This is the greatest wonder of the world that everyday people witness death of others but they are so intensely entangled in worldly affairs, attachment and illusion, that they themselves are oblivious of their own death.

Rishi Patanjali also states in his Yog Shastra sutra 2/9:-

"Svarasvaahee vidushoapi tatharoodoabhiniveshaha."

i.e. (Svarasvaahee) that which exists naturally since times immemorial (vidushaha api) which mounts on both, learned and ignorant equally, that is called (abhiniveshaha) abhinivesh, that death is fearful suffering for all living-beings.

Abhinivesh i.e. Death is such an inevitable suffering which effects learned and ignorant equally. Infact entire world is destined to sleep in the lap of death one day. ***But Yogis easily overcome the fear of death,*** if not death itself, they being away from illusion and experiencing the difference between alive and non-alive matters i.e. soul being immortal and body being non-alive destructible matter ***(Yajurved mantra 40/14 refers).*** From the day a baby is born and in all stages of his life till the time of his death, he fears death every second of his life due to the effect of experiencing death in previous births, being registered in his chitta.

While commenting on this sutra, ***Vyasmuniji*** states that all living beings desire for themselves that they should never cease to exist. It concludes death is the authority/power that causes great fear and unbearable pain.

Moreover, no living-being can transgress death, which is inevitable. But we overcome the fear of loss by recognizing the fact that nothing belongs to us. The

eternal phenomenon of inevitable death has been explicitly dealt by God in ***Atharvaved mantra 8/2/23*** wherein it is explained that (dvipadaam) two legged creatures i.e. humans, animals and so on are devoid of their vital airs by (mrityuhu eeshey) death, the master. Let us also deliberate over ***Atharvaved mantra 10/8/5*** which carries the idea that soul comes and goes alone-

"Idam savitarvi jaaneehi shadyama ek ekajaha,

Tasminhapitvamichchante ya eshaamek ekajaha."

The mantra states that Oh! Soul, you should understand that five sense organs and sixth mind are all Yam i.e. work after pairing with one another. Soul alone comes within human body. The soul comes alone within these senses of body, so the senses along with mind definitely desire to make friends or connect with him (soul). Connect here means that till the time soul remains within body, the six senses work. As soon as the soul leaves the body, these corporal organs of sense stop functioning. Hence, the ved mantra explains symbolically that sense organs desire to make friends or connect with soul so that soul remains in body and senses continue to function to feed all the worldly matters to soul as soul itself has no means to get worldly knowledge. However, when death advents on stipulated time, these corporal senses and soul depart from one other. ***Alive soul leaves the body on death and as per his deeds takes next birth and acquires another body.*** The previous corporal sense organs are burnt along with dead body on pyre. ***However, subtlest, minutest body also called sooksham shareer including five vital airs, five sense organs, five subtlest bhoot along with mind and intellect accompany soul even after death.***

Birth is preordained by the sum of our karmas, actions from previous lives. We are thus caught in the vicious cycle of birth-death-rebirth, life after life. Before leaving the body, soul's previous lives' karmas are decisive in scripting his next birth.

Yogeshwar Sri Krishna Maharaj also states in Bhagwad Geeta shloka 13/8-

"Indryartheshu vairagyamanahankar ev cha,

Janammrityujaravyadhidukhdos hanudarshanum."

i.e. Oh! Arjun, those people who are

living without discharging their moral duties mentioned in Vedas, they and you shall suffer death, birth, painful old age, diseases i.e. innumerable sufferings again and again, it is strange that a person fails to understand this fact, due to lack of knowledge of Vedas.

A person dies the moment he loses awareness of birth. One who is not aware of the purpose of his birth, then Vyasmuniji states in Mahabharat, that undoubtedly he is seen in the form of human-being but actually in the absence of vedic knowledge, he is equivalent to animal harbouring the same four qualities of eating, sleeping, fearing and reproducing as found in animals.

Infact, the only reason for not understanding this vedic knowledge and secrets of death is that such person remains engrossed in prakriti made materialistic matters like gold, wealth, prosperity and vices like greed, pride and so on. Thus while deriving transient and perishable pleasure out of them, himself meets with death and wanders in lower yonis like that of animals, insects and so on.

Further in ***Atharvaved mantra 8/8/11,*** God is stated to be Yam i.e. Yamraj. In the mantra, physical pains, sorrows and diseases have been referred to as ***"mrityudootaha"*** i.e. messenger/ envoys/ambassadors of death. Mantra carries a prayer that Oh! God (amoon nayat) take these enemies of ours away from us i.e. destroy them. Hence, one must keep in mind that worship of formless God alone, which is mentioned in Vedas, can save us from death and none else.

Indeed, ***Atharvaved mantras 8/1/4 and 5*** also state that Oh! (Purush) living-being (Ataha Ut Kram) acquire vedic knowledge and rise above the bindings of death. (Mrityuhu tva dayataam) may death protect you.

In Rigved 10/51/4, there is a prayer that oh! (Varunn) God worthy to be acquired (Aham) I, the soul (Hotraat bibhyat) have come in your shelter, from the fear of death which indicates that no one except God can save us from death and provide us with salvation. So, just as the offerings given in

God needs no assistance to command over the world, being Almighty - Swamiji

burning fire of Yajyen are reduced to ashes similarly death is engulfing everyone.

Further, the mantra preaches that the senses are pulling the soul towards their several vices like sensuality, attachment etc. That is why, being entangled in the matters made of prakriti, the soul's original form of purity, nature of being alive and immortal has got hidden. These powers cannot be rejuvenated without following the vedic path under the guidance of learned Acharya.

As per Rigved mandal 10, sukta 114, God snatches away the human-body from ignorant persons and admonishes them into countless lower births like that of insects, animals, birds and so on, to suffer forever. The main reason behind this is ignorance/illusion which takes away the power of reasoning from that person and he considers untruth as truth, sorrow as happiness, unpious as pious and mortal as immortal, which are the main signs of illusion.

It is pertinent to mention here that ancient vedic literature, written by Rishis like Mahabharat, Valmiki Ramayan etc. which constitute world's history, proves the fact that earlier yugas did not witness such sufferings owing to the fact that Vedic knowledge was prevalent in every household.

These ambassadors of death have become effective since the decline of vedic knowledge. Hence to protect ourselves from such ambassadors of death, it is imperative for us to seek the shelter of Yamraj i.e. Formless God, who rules over/commands/controls universe including death for which we further require the preach of Vedas under the guidance of learned acharya. When we seek the shelter of learned acharya then the fire of knowledge ignited by the Acharya burns away the bad desires of the disciple. But non-compliance of God's orders in Vedas banishes us to sorrows and difficulties. Vedas, which emanate directly from God, have been describing the form of death and ways to protect ourselves from death from times immemorial. ***Now that mostly people have left Vedas' knowledge so they are unaware of true form of death and ways of protection from death described in Vedas. Ironically, man is making and following his own unauthentic ways of protection from death.***

Do pious deeds, worship by attaining knowledge for Vedas - Yajurved Mantra 15/7

This in turn is proving disastrous and pushing more people to death. We will have to understand that only God's rules govern the God's created universe which should be universally obeyed. Everything good or bad comes to an end. Life is short whereas hurdles are innumerable. So, endings are times for introspection and philosophising that life is invaluable. So, we must follow the vedic path to determine its aim as early as possible otherwise definitely we will have to face the God's law, that he snatches away the human-body as quoted above.

The soul, in its original state, is an embodiment of purity, peace, love and truth. When soul, by following vedic path, recognizes himself as soul and not body, these qualities manifest in his thoughts, words and actions. Spiritual awareness is the most effective antidote for the ills afflicting human kind today. The remedy is subtle but powerful; all that is required to use it, is paradigm shift in our consciousness from body to soul, through vedic knowledge. When we seek the shelter of Vedas, we find that the grace of God flows more freely through us. Life itself may knock us down, but we will find new strength to handle it.

Editor's Insight

I feel that the childhood remembrance inspired ***Sadhvi Geetanjali*** to offer heartfelt tribute to the departed soul hidden in the untrodden space where nobody becomes able to go with human-body. So, my appreciation for Geetanjali and heartiest blessings to the soul.

Really, she has also stated ***the eternal and everlasting truth that most painful, unavoidable suffering death swallows learned as well as ignorant equally.*** Secondly, she has pointed out that there is nobody except God, whose vedic worship protects us from death. So, I comment on the said matter that if a person is really desirous of experiencing pleasure of the present as well as coming lives then he will have to worship the greatest God, Who is the form of divine light and pleasure, is formless, Almighty, creates, nurses and destroys the universe. Question arises that, Who is this God? In this connection, Vedas reply authentically that – He is God whose divine qualities have been mentioned only in Vedas, by God Himself. ***(Yajurved mantra 40/8 also refers)*** i.e. He is God whom the God Himself states to be God in Vedas and nobody else.

God creates the innumerable matters of universe and the living-beings' bodies etc. but neither worldly matter nor anybody can create God. ***(Yajurved mantra 40/8 refers).*** Secondly, vedic knowledge also emanates from God and not

from anybody else. ***(Rigved mantra 10/109/1 refers).*** If we truly think from the core of our heart, we would find that though innumerable divine qualities exist in God but even the said two qualities (God cannot be created and Vedas emanate from God) do not exist in anybody in the universe. So, worship is not a matter but before starting it, an aspirant should truly be able to decide the form of God, from Vedas.

Sadhvi Geetanjali, who has attained high education, being B.Sc, L.L.B, K.A.S and who has served as undersecretary to J&k Government for sometime, has been since long listening/learning Vedas, doing name jaap of God, Yogabhyas and has been performing daily Yajyen/Agnihotra with ved mantras, knows about God and that is why, she has very well tried her level best to quote the divine qualities of Almighty God, whom we must worship to overcome death.

In this regard, I would also like to quote, Yajurved mantra 31/18 as under-

"Vedaahametam Purusham Mahaantamaadityavarnnam Tamasaha parastaat,

Tamev Viditvaati Mrityumeti naanyaha pantha Vidyateayanaaya."

In this ved mantra, there is a preach to an aspirant [So, let us be good aspirants by listening Vedas.] that Oh! aspirant, I (Ved) know the God, Who creates all the worldly matters from prākriti, (Mahaantam) has unlimited divine qualities (Adityavarnnam) who is form of divine light i.e. He gives the light to sun, moon and the whole world etc.

but He never takes light from any source, (Tamsaha Parastaat) Who is away from ignorance/illusion (Purusham) He is Almighty and perfect in all respects (Tamev Viditva) by knowing Him only, you (Ati+eti) overcome (Mrityum) the severe pain of death. In the last, mantra preaches a deep advice for the whole universe that (Anyaha Panthaha Na Vidyate) without knowing the said God there is no other path to overcome the death (Aynaaya) and by destroying the sorrows to attain final liberation.

Meaning-

In this ved mantra, there is a preach to an aspirant [So, let us be good aspirants by listening Vedas.] that Oh! aspirant, I know the God, Who creates all the worldly matters from prakriti, has unlimited divine qualities who is form of divine light i.e. He gives the light to sun, moon and the whole world etc. but He never takes light from any source, Who is away from ignorance/illusion. He is Almighty and perfect in all respects by knowing Him only, you overcome the severe pain of death. In the last, mantra preaches a deep advice for the whole universe that without knowing the said God there is no other path to overcome the death and by destroying the sorrows to attain final liberation.

Infact, the traditional Vedic preach from learned Rishi-Munis has been meant for a good aspirant and since we are human-beings and our main motto of life is to attain salvation by worshipping God by following vedic path, therefore, it is our moral duty entrusted by God in Vedas to become good aspirants, in the absence of which, we would not be able to know the eternal, everlasting, immortal, omnipresent and Almighty God whose description is mentioned in Vedas by God Himself and not by any other human-being etc. otherwise, what would be the use of doing worship without knowing the above cited God, ask Vedas. You know, the above quoted ***Yajurved mantra 31/18*** emphasis forcefully that the death is overcome by knowing the only God who has been described as above.

So, like the previous yugas, we will have to revert back to Vedas to overcome the sorrow of death and this is what Geetanjali has also explained in her knowledgeable and valuable article.

VIV

गुरु-शिष्य संवाद

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

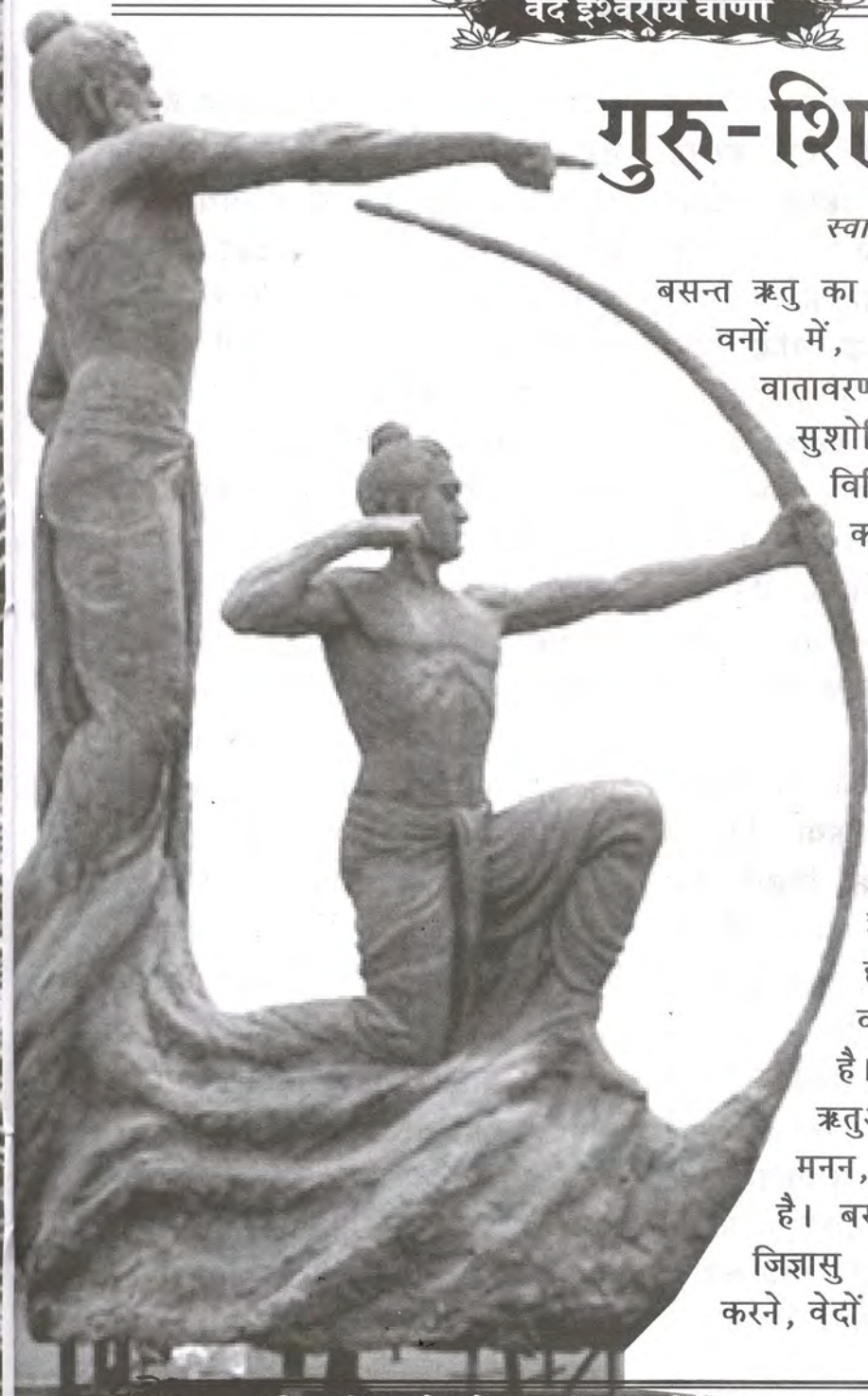

बसन्त ऋतु का आगमन है। सरोवरों में, वनों में, अनेक प्रकार के पुष्प वातावरण को सुगन्धित एवं सुशोभित कर रहे हैं। वनों में विविध प्रकार के पक्षियों के कलरव से आनन्द अनुभव हो रहा है। इधर–उधर नृत्य करते हुए मयूर शोभायमान हो रहे हैं। झुण्ड के झुण्ड ये पक्षीगण परस्पर एक दूसरे का आह्वान करते हुए आनन्दपूर्वक चहक रहे हैं। ज्ञान दिए बिना ज्ञान नहीं होता। ऊपरलिखित सुन्दर वर्णन भी वेदों से ही सुलभ है। वेदों में ईश्वर की सभी ऋतुओं में पूजा, अध्ययन, मनन, यज्ञ आदि करने की आज्ञा है। बसन्त ऋतु में भी सभी जिज्ञासु ज्ञान–विज्ञान में उन्नति करने, वेदों का ज्ञान प्राप्त करके शुद्ध

बुद्धि रूपी वाण से मारे गए व्यक्ति की कोई चिकित्सा नहीं है - विदुर नीति

बुद्धि से वेद–विद्या को प्राप्त करने की जिज्ञासा लेकर गुरुकुल में निवास कर रहे हैं। वैदिक विद्या प्राप्त करके जिज्ञासु अविद्या आदि क्लेशों का नाश करने के प्रयास में रत हैं। विद्वानों के समान ही मनन–शील बुद्धि, शुद्ध बुद्धि प्राप्त करके विद्यार्थी ज्ञान प्राप्ति की इच्छा में अग्रसर हुए, आचार्य की प्रतीक्षा में एक कक्ष में अपना–अपना स्थान ग्रहण करके शांतिपूर्वक बैठे हैं। कुछ क्षण पश्चात् आचार्य का आगमन होता है। सब विद्यार्थी उठकर आचार्य को नमस्ते करके एवं उनका अभिवादन करके शांतिपूर्वक बैठ जाते हैं।

आचार्य ने विद्यार्थियों को उपदेश देते हुए कहना प्रारम्भ किया कि हे विद्यार्थियों! मैंने आपको पिछले कुछ महीने अथर्ववेद, ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के मन्त्रों का अध्ययन कराया है। इनमें से ही कुछ प्रश्न आपसे पूछता हूँ।

आचार्य: हे बेटी, ऋचा! आपने केवल परोक्ष ब्रह्म अर्थात्, निराकार ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किया है या अपने सामने उपस्थित सृष्टि के प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले पदार्थों (भौतिकवाद) को जानने का प्रयत्न किया है?

बेटी ऋचा, मेरा भाव यह है कि तुमने आध्यात्मिकवाद द्वारा केवल ब्रह्म उपासना में ही रुचि ली है अथवा इस ब्रह्म उपासना को त्यागकर केवल प्राकृतिक भोग पदार्थों एवं सृष्टि के पदार्थों को ही जानने और उनसे भौतिक लाभ लेने का ही प्रयत्न किया है अर्थात् भौतिकवाद में ही रुचि ली है?

ऋचा आचार्य का सम्मान करती हुई श्रद्धापूर्वक उत्तर देती है–

ऋचा: हे आचार्य! परमेश्वर ने इसी ***अथर्ववेद मन्त्र 11/3(2)/31*** में हमें समझाया और आपने इस वेदमन्त्र का ज्ञान देते हुए पूर्ण रूप से हमें समझाया कि यदि मनुष्य सम्पूर्ण आयु केवल ब्रह्म का ही ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहेगा, विपरीत में भौतिकवाद में उन्नति नहीं करेगा तो मनुष्य पूर्णरूप से जीवन को धारण नहीं कर सकेगा। क्योंकि नित्य कर्म जैसे प्रात:काल उठना, पौष्टिक आहार ग्रहण करना, व्यायाम आदि करना, परिवार के पालन–पोषण के लिए मेहनत से धन अर्जित करना, समाज में भाईचारे से रहना, विज्ञान की उन्नति से खेती–बाड़ी इत्यादि अनेक जीवन उपयोगी शुभ कर्म भौतिकवाद

की उन्नति से ही सम्भव हैं तथा भौतिकवाद की उन्नति का वर्णन भी चारों वेदों में है। अत: पुरातन काल के समान आज भी हमें भौतिकवाद की उन्नति की शिक्षा वेदों से ही प्राप्त करनी चाहिए अन्यथा भौतिकवाद की अवनति से जीवन दुर्लभ हो जाएगा तथा विज्ञान की उन्नति में भी बाधा मनुष्य के लिए दु:खदायी होगी, अन्न एवं धन की उन्नति और उसकी प्राप्ति सुलभ नही होगी, इत्यादि। यदि मनुष्य केवल सृष्टि के पदार्थों का ही ज्ञान प्राप्त करने में आयु लगाएगा अर्थात् केवल भौतिकवाद की ही उन्नति करेगा, आध्यात्मिकवाद का त्याग कर देगा तब मनुष्य को दोष दूर करने वाली शक्तियाँ त्याग देंगी और इस प्रकार मनुष्य को पाप कर्म से रोकने वाला कोई साधन भी नहीं रहेगा तथा मनुष्य पाप कर्म करने में स्वतन्त्र हो जाएगा जैसे शुभ एवं अशुभ कर्मों का ज्ञान नही रह जाएगा, माता–पिता, गुरुजनों का आदर, मान–सम्मान समाप्त प्राय: हो जाएगा। नारी अपमान बढ़ जाएगा, गरीबी–अमीरी में अन्तर बढ़ता जाएगा, राग–द्वेष, काम–क्रोधादि अनेक बुराइयाँ इन्सान में पनपने लगेंगी और जो विज्ञान की तरक्की से मनुष्य जाति की रक्षा के लिए शस्त्र आदि का निर्माण होगा उस बम्ब (शस्त्र) आदि को मनुष्य जाति के विनाश के लिए ही प्रयोग किया जाएगा। भुखमरी, गुण्डागर्दी बढ़ जाएगी अर्थात् ऐसी अनेक बुराइयाँ समाज में पनपेंगी और दूर–दूर तक सुख– शांति, चैन नज़र नहीं आएगा। क्योंकि केवल वैदिक आध्यात्मिकवाद ही मनुष्य को बुरे कर्म करने से रोकता है। इसके अतिरिक्त बुराई रोकने का कोई अन्य मार्ग नहीं है। अत: केवल प्रकृति के ज्ञान अर्थात् भौतिकवाद की उन्नति में रत प्राणी

दूषित जीवन वाला हो जाएगा।

अतः हे आचार्य! आध्यात्मिकवाद में रमन करने वाले का जीवन धारण करना सम्भव ना होगा क्योंकि ज्ञान के अभाव में मनुष्य आपस में लड़–लड़कर और विभिन्न प्रकार के रोगों से त्रस्त होकर मर जाएगा। दूसरी ओर ब्रह्म ज्ञान के अभाव में जीवन दोषों से परिपूर्ण हो जाएगा क्योंकि तब मनुष्य ज्ञान विहीन होकर केवल प्राकृतिक भोगों, प्रकृति रचित पदार्थों की ओर आकर्षित होकर भोग विलासों में फंस जाएगा। यह ईश्वर का अटल नियम है कि आध्यात्मिकवाद–ईश्वर भक्ति के बिना कोई भी मनुष्य सुख को प्राप्त नहीं कर सकता। अतः वेदानुसार भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों उन्नतियों का साथ–साथ होना सुखमय जीवन के लिए अति आवश्यक है।

आचार्यः शाबाश, बेटी। आपने अथर्ववेद के मन्त्र का बहुत उत्तम भाव बताया। हे सोमेन्द्र! मेरा प्रश्न है कि ईश्वर किसे कहते है?

सोमेन्द्रः प्रणाम, आचार्य। प्रलयावस्था के पश्चात् जब ईश्वर सृष्टि की रचना करता है तब स्वाभाविक ही बिना माता–पिता के उत्पन्न अमैथुनी सृष्टि के नर–नारी अज्ञानी–अविद्याग्रस्त होते हैं। कारण है कि ज्ञान दिए बिना ज्ञान नहीं होता। उस समय पिछली सृष्टि क` प्राणी एवं आचार्य– गुरु, इत्यादि, शरीर त्याग चुके होते हैं। तब ईश्वर अपनी सामर्थ्य से चारों वेदों का ज्ञान चार ऋषियों के हृदय में प्रकट करता है। अब ज्ञान के दाता ईश्वर ने चारों वेदों का ज्ञान दे दिया और ज्ञान लेने वाले चार ऋषियों (अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा) ने ज्ञान ले लिया। भाव है कि वेदों में ही स्वयं ईश्वर ने अपना स्वरूप, ज्ञान, बल और दिव्य कर्म इत्यादि का ज्ञान दिया है। वेदों में पदार्थ विद्या–विज्ञान, कर्म काण्ड एवं उपासना काण्ड आदि का विस्तार से वर्णन है। अब विचार यह करना है कि सब नर–नारी तो अज्ञानी हैं, ज्ञानवान् तो चार ऋषि हुए और उन चारों ऋषियों ने आगे ब्रह्मा को ज्ञान दिया, ब्रह्मा ने आगे मनुष्यों को दिया। इस प्रकार ज्ञान तो वेद ही है। वेद में ईश्वर ने अपना स्वरूप प्रकट किया है। जैसे कोई व्यक्ति अकेला, अन्जान नगरी में पहुँचता है तो जब तक वह अपना परिचय, नाम इत्यादि दूसरों को स्वयं नहीं बताता तब तक उस

अन्जान नगरी में उस व्यक्ति के विषय में किसी को भी जानकारी नहीं होगी। इसी प्रकार नव रचित अमैथुनी सृष्टि–नगरी में, जहाँ सभी नर–नारी ईश्वर को नहीं जानते, तो ईश्वर और अन्य पदार्थों आदि की जानकारी अमैथुनी सृष्टि के मनुष्यों को तभी प्राप्त होगी जब ज्ञानदाता स्वयं ईश्वर उन्हें, उस अन्जान नगरी में गए मनुष्य कि तरह, अपने विषय में बताएगा। अतः अनादि एवं अविनाशी सत्य तो यही है कि ईश्वर उसे कहते हैं जिसे वेदों में ईश्वर स्वयं ईश्वर कहता है। क्योंकि ईश्वर मनुष्यों द्वारा बनाया नहीं जा सकता। इसलिए ईश्वर को वेदों में स्वयंभू कहते हैं।

हे आचार्य! सारांश यही है कि ईश्वर की भक्ति प्रारम्भ करने से पहले प्रत्येक नर–नारी को वेदाध्ययन द्वारा यह सिद्ध कर लेना चाहिए कि ईश्वर किसे कहते हैं। अन्त में इस विषय में मैं संक्षेप में इतना ही कहूगां कि ***यजुर्वेद मन्त्र 40/8*** में ईश्वर स्वयं अपना स्वरुप प्रकट करते हुए कह रहे हैं–

''स
पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरम्
शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी
परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।
(यजुर्वेद मन्त्र 40/8)

हे मनुष्यों! वह ब्रह्म (शुक्रम्) सर्वशक्तिमान् (अकायम्) शरीर रहित है अर्थात् परमेश्वर का मनुष्यों की भांति स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण शरीर नहीं होता (अव्रणम्) वह छिद्ररहित है, उसके टुकड़े नहीं हो सकते (अस्नाविरम्) परमेश्वर की नस–नाड़ियाँ आदि नहीं होतीं (शुद्धम्) उसमें अविद्या आदि दोष ना होने के कारण, वह सदा शुद्ध है (अपापविद्धम्) परमेश्वर पाप कर्म से सदा दूर है और पापियों को भी प्रेम नहीं करता। वह (परि+अगात्) सर्वव्यापक है, ब्रह्माण्ड के कण–कण में है और ब्रह्माण्ड से परे भी है उसे एक जगह स्थापित नहीं किया जा सकता (कविः) सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ एवं कण–कण को जानने वाला है (मनीषी) सबके मन की वृत्तियों को जानने वाला है (परिभूः) दुष्टों और पापियों का संहार करने वाला है (स्वयंभूः) उसकी सत्ता स्वयं अपने आप से है, ना तो किसी पदार्थ ने उसे बनाया है और ना परमेश्वर से आगे कोई पदार्थ बन सकता है क्योंकि जब

परमेश्वर को कोई भी पदार्थ बना नहीं सकता, उसकी सत्ता पदार्थ रहित है, अत: किसी पदार्थ के संयोग से उसकी उत्पत्ति नहीं होती और वियोग से वह नष्ट नहीं होता। इस प्रकार परमेश्वर के कोई माता–पिता भी नहीं होते। अत: वह परमात्मा (शाश्वतीभ्य:) सनातन, अनादि स्वरूप वाली अविनाशी (समाभ्य:) प्रजा के लिए (याथातथ्यत:) यथार्थता से अर्थात् जैसा है वैसा ही ठीक–ठीक (अर्थान्) वेद के द्वारा सब पदार्थों का (व्यदधात्) उपदेश करता है (स:) वह परमात्मा ही सबके द्वारा उपासना करने योग्य है, अन्य नहीं।

अर्थ: हे मनुष्यों! वह ब्रह्म सर्वशक्तिमान्, शरीर रहित है अर्थात् परमेश्वर का मनुष्यों की भांति स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण शरीर नहीं होता, वह छिद्ररहित है, उसके टुकड़े नहीं हो सकते, परमेश्वर की नस–नाड़ियाँ आदि नहीं होतीं, उसमें अविद्या आदि दोष ना होने के कारण, वह सदा शुद्ध है, परमेश्वर पाप कर्म से सदा दूर है और पापियों को भी प्रेम नहीं करता। वह सर्वव्यापक है, ब्रह्माण्ड के कण–कण में है और ब्रह्माण्ड से परे भी है, उसे एक जगह स्थापित नहीं किया जा सकता, सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ एवं कण–कण को जानने वाला है, सबके मन की वृत्तियों को जानने वाला है, दुष्टों और पापियों का संहार करने वाला है, उसकी सत्ता स्वयं अपने आप से है, ना तो किसी पदार्थ ने उसे बनाया है और ना परमेश्वर से आगे कोई पदार्थ बन सकता है क्योंकि जब परमेश्वर को कोई भी पदार्थ बना नहीं सकता, उसकी सत्ता पदार्थ रहित है, अत: किसी पदार्थ के संयोग से उसकी उत्पत्ति नहीं होती और वियोग से वह नष्ट नहीं होता। इस प्रकार परमात्मा के माता–पिता भी नहीं होते। अत: वह परमात्मा सनातन, अनादिस्वरूप वाली अविनाशी प्रजा के लिए यथार्थता से अर्थात् जैसा है वैसा ही ठीक–ठीक वेद के द्वारा सब पदार्थों का उपदेश करता है। वह परमात्मा ही सबके द्वारा उपासना करने योग्य है, अन्य नहीं। और वेदानुसार ईश्वर की भक्ति, यज्ञ, अष्टाँग योग की साधना, नाम स्मरण और इससे भी पहले चारों वेदों एवं अष्टाँग योग के ज्ञाता, विद्वान् का संरक्षण प्राप्त करना है।

आचार्य: बहुत अच्छा, सोमेन्द्र बेटा।

आपने ईश्वर के विषय में वेदों से सत्य एवं अनुपम जानकारी दी। हे पुत्र, ओमेन्द्र! आप जीवात्मा के स्वरूप के विषय में कुछ कहें।

ओमेन्द्रः प्रणाम, आचार्य। चारों वेदों में परमेश्वर, जीवात्मा एवं प्रकृति, इन तीनों का (त्रैतवाद का) उपदेश है (देखें ***अथर्ववेद मन्त्र 9/9/9***)। परमात्मा एवं जीवात्मा, दोनों स्वयंभू, चेतन एवं अविनाशी तत्त्व हैं। परमात्मा के तो अनन्त दिव्य गुण हैं। प्रकृति जड़ तत्त्व है जिससे सृष्टि की रचना होती है। सृष्टि रचकर परमात्मा सम्पूर्ण सृष्टि में समा जाता है– व्याप्त हो जाता है। परमात्मा जन्म–मरण से रहित है। परन्तु जीवात्मा कर्म बन्धन में बंधा, शुभ–अशुभ कर्मानुसार मनुष्य की योनि अथवा पशु–पक्षी की योनियों में प्रवेश करता रहता है, प्रकृति के जन्म–मृत्यु के चक्र में फंसा रहता है। कर्मानुसार मनुष्य चोले में आया जीवात्मा जब किसी वैदिक विद्वान् की शरण में आकर शुभ कर्म एवं वेदानुसार ईश्वर की पूजा करता है तब उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। जीवात्मा स्वभाव से तो नित्य, शुद्ध, बुद्ध अर्थात् मुक्त स्वभाव वाला एवं संगरहित है (देखें ***सांख्य शास्त्र सूत्र 1/15, 19***)। परन्तु प्रकृति रचित पदार्थों में आकर्षित होने और इस भौतिकवाद की चमक–दमक में फंसने के कारण अविवेकी होकर स्वयं को दु:खी और बन्धन युक्त आदि समझने लगता है। किसी वैदिक विद्वान् की शरण में जाकर वह अपने स्वरूप को समझने में सफल होता है। ***यजुर्वेद मन्त्र 7/28*** में उपदेश है कि योग विद्या के बिना कोई भी मनुष्य पूर्ण विद्यावान् नहीं होता। ईश्वर द्वारा इस आज्ञा को स्वीकार करते हुए सब मनुष्यों को नित्य योग विद्या का सेवन करना चाहिए। फलस्वरूप ही हम अपने (जीवात्मा के) स्वरूप को जानने में समर्थ होंगे। ईश्वर उपदेश करता है कि हे योग एवं ब्रह्मविद्या को देने वाले, विद्वान्! तू आत्म बल एवं योग बल तथा स्वयं को जानकर सबको परमेश्वर एवं जीवात्मा के विषय में उपदेश कर।

हे आचार्य! ***यजुर्वेद मन्त्र 2/26*** में ईश्वर ने जीवात्मा को "स्वयंभू:" अर्थात् अनादिस्वरूप है, ऐसा कहा है। यह जीवात्मा अनादि एवं स्वयंभू है। इस कारण जीवात्मा के माता–पिता नहीं होते। परन्तु जैसा ऊपर कहा कि

जीवात्मा अविवेकी होने के कारण कर्म–बन्धन में आ जाता है। जब जीवात्मा जिज्ञासु होकर आचार्य के पास ज्ञान प्राप्त करने के लिए जाता है और आचार्य के मुख से निकलते हुए एक–एक शब्द (वैदिक ज्ञान) को ध्यान से सुनता है, उसके अन्दर जीवन के निर्माण की भावना होती है, उस जीवात्मा का एक मात्र उद्देश्य सत्य ज्ञान की प्राप्ति होता है, वह जीवात्मा पुरुषार्थी–अत्यंत परिश्रम करने वाला और ध्यान प्रधान मन वाला होता है, आचार्य के सदा समीप होता है और नम्रता की भावना से ओत–प्रोत होता है। फलस्वरूप ही वह जिज्ञासु जीवात्मा स्वयं के अनादि स्वरूप एवं परमेश्वर को योगाभ्यास आदि द्वारा जानकर मोक्ष पद प्राप्त करता है। इस प्रकार वह सभी दु:खों से छूट जाता है।

आचार्य: हे विद्यार्थियों! आपने अध्ययन के आधार पर बहुत उत्तम भावार्थ कहे। इन भावार्थ को आप सबने अपने जीवन में धारण करना है अर्थात् पढ़ने–लिखने, विज्ञान तथा ज्ञान में चहुँ मुखी उन्नति करके सबको अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष सिद्ध करना चाहिए। VIV

मानव जीवन का उद्देश्य

इतने बड़े मानव–जीवन के उद्देश्य का हीं पता नहीं।

ऋचा कौशिक
इंजीनियर *(बी.टैक.)*

एक व्यक्ति बाज़ार से दो बड़ी लकड़ियाँ खरीदता है और दो छोटी। चार पावे खरीदता है, कुछ सूत्री। सबको इकट्ठा करके बुनना शुरू करता है। उससे पूछिए कि ''यह सबकुछ क्यों कर रहे हो?''

तो वह कहेगा– ''चारपाई बना रहा हूँ।''

पूछिए– ''चारपाई बनाकर क्या करेगा?''

वह कहेगा– ''सोऊँगा''।

यह ठीक उत्तर है। छोटी सी चारपाई का उद्देश्य हम जान सकते हैं।

संपादक के विचार

ऋचा बेटी ने थोड़े से शब्दों में समुन्दर से भी अति गम्भीर विषय को यहाँ प्रस्तुत किया है। स्पष्ट दिख रहा है कि नवजात शिशु जन्म लेता है, बाल्यावस्था प्राप्त करके पुनः तरुणावस्था में प्रवेश करता है, गृहस्थाश्रम के कर्मों को निभाता–निभाता पूर्ण वृद्धावस्था को प्राप्त करके एक दिन शरीर को त्याग कर उसमें रहने वाला जीवात्मा बारह दिन अन्तरिक्ष में भ्रमण करके कुछ समय पश्चात् कर्मानुसार मनुष्य, पशु, पक्षी अथवा कीट–पतंग आदि का शरीर धारण कर लेता है। ***ऋग्वेद मन्त्र 10/135/1, 2*** के अनुसार मनुष्य पिछले जन्मों में किए कर्मों का भोग करने के लिए शरीर धारण करता है और वर्तमान में किए कर्मों का फल पाप–पुण्य के रूप में अगले जन्मों में भोगता है। साधारण जन की यही स्थिति

कही गई है। इस विषय में ***भगवद्गीता श्लोक 13/8*** में कहा–

''इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्।''

अर्थात् हे अर्जुन! मनुष्य जन्म में इन्द्रियों में आसक्ति का अभाव अर्थात् इन्द्रिय विषयों से वैराग्य होना, अहंकार का त्याग करना तथा बार–बार जन्म और मृत्यु, जरा एवं रोग आदि दु:खदायक हैं, इन दोषों पर भी विचार करना चाहिए। भाव है कि जीव जिज्ञासु होकर, वेद मार्ग पर चलकर, जीवन का जो लक्ष्य–ब्रह्म प्राप्ति है, उसे प्राप्त करने का अटूट प्रयत्न करे। हम यह स्पष्ट समझ लें कि अथर्ववेद में कहा कि चारों वेदों का मुख्य लक्ष्य ब्रह्म प्राप्ति है।

जैसे कि महाभारत के वनपर्व में कहा कि मनुष्य जन्म का लक्ष्य तो ब्रह्म प्राप्ति है परन्तु–

''अहन्यहनि भूतानि
गच्छन्तीह यमालयम्।
शेषाः स्थावरमिच्छन्ति
किमाश्चर्यमतः परम्।।

अर्थात् संसार में मृत्यु प्राप्त प्राणी प्रतिदिन यमलोक में जा रहे हैं। परन्तु जो शेष जीवित बचे हैं, वे सर्वथा जीने की इच्छा करते हैं (भ्रांति में हैं कि उन पर मृत्यु नहीं आएगी), इससे बढ़कर और बड़ा आश्चर्य क्या हो सकता?

आदरसहित अग्निहोत्र, मौन पालन, स्वाध्याय और यज्ञ भय दूर करते हैं - विदुर नीति

परमेश्वर ***अथर्ववेद मन्त्र 10/8/43*** में समझा रहे हैं कि यह मनुष्य का शरीर ***''पुण्डरीकं''*** – पुण्यवान् कर्म करने का साधन है। यह नवइन्द्रिय द्वारों वाला एवं सत्व, रज एवं तम रूप प्रकृति के तीनों गुणों से आवरित शरीर पुण्यवान् कर्म करके ईश्वर प्राप्ति के लिए दिया गया है। इस लक्ष्य को कोई बिरला ही ब्रह्म जानी प्राप्त करता है जबकि यह अधिकार ईश्वर ने सम्पूर्ण मनुष्य जाति को दिया है। वस्तुत: समस्या यह है कि चारपाई बुनने का उद्देश्य तो उसपर बैठकर अथवा लेटकर शरीर को सुख देना है, और यह सब भौतिकवाद है तथा इस सुख की इच्छा सभी प्राणियों में है। फलस्वरूप ही तो अमीर लोग बहुत सुन्दर–सुन्दर, एक से बढ़कर एक कीमती डबल बैड से घर के शयनकक्ष को सजाते हैं और अन्त में यहीं छोड़ जाते हैं।

जब महाभारत में अर्जुन ने श्रीकृष्ण का दाह कर्म आदि संस्कार सम्पूर्ण किया, तो रात्रि में वह श्रीकृष्ण महाराज के कक्ष में सजाए सुन्दर सोने के पलंग पर शयन करने के लिए लेटा तब उसके मन में विचार आए कि जिस पलंग पर वर्षों श्रीकृष्ण महाराज ने विश्राम किया–शयन किया, आज वह शरीर त्याग कर चले गए और अब मैं (अर्जुन) पहली बार इस पलंग पर शयन करने के लिए लेटा हूँ।

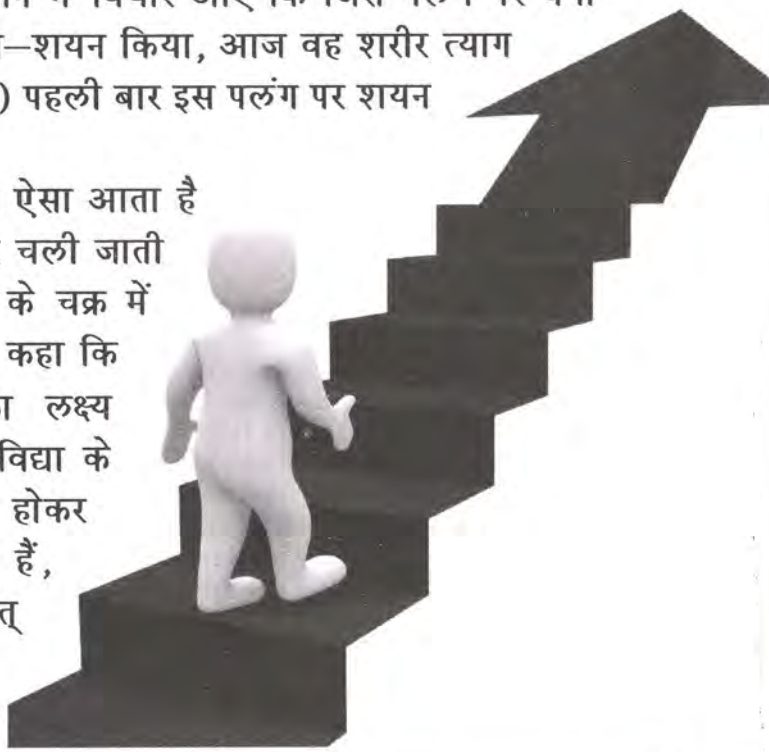

भाव यह है कि एक दिन ऐसा आता है जीवात्मा सबकुछ यहीं छोड़ कर चली जाती है। पुन: प्रकृति के जन्म–मृत्यु के चक्र में फंस जाती है। परन्तु ***ऋग्वेद*** में कहा कि जो जिज्ञासु अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित कर लेते हैं और वेद विद्या के ज्ञाता, विद्वानों के आश्रय में होकर वेदानुसार जीवन व्यतीत करते हैं, वही मनुष्य जीवन के लक्ष्य अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति को प्राप्त कर लेते हैं, अन्य नहीं।

बुद्धि पूर्वक किए जाने वाले कार्य ही श्रेष्ठ होते हैं - विदुर नीति

Correspondence between Swami Ram Swarup 'Yogacharya' & Late S. Khushwant Singh Ji

(Continued)

(on the subject of Atheism & Casteism etc.)

Original Letter

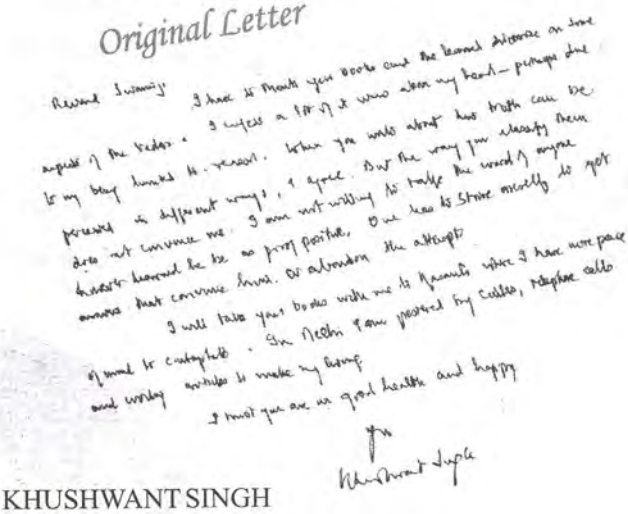

KHUSHWANT SINGH
12th August 2005
49-E SUJAN SINGH PARK
NEW DELHI-110003

Revered Swamiji,

I have to thank you for books and the learned discourse on some aspects of the vedas. I confess a lot of it was above my head-perhaps due to my being limited to reason. When you write about how truth can be perceived in different ways, I agree. But the way you classify them, does not convince me. I am not willing to take the word of anyone however learned he be as proof positive. One has to strive oneself to get answers that convince him or abandon the attempt. I will take your books with me to Kasauli where I have more peace of mind to contemplate. In Delhi I am pestered by………………..., telephone calls and writing articles to make my living.

I trust you are in good health and happy.

Yours,
Khushwant Singh.

Shri Khushwant Singhji
12th August 2005
49-E SUJAN SINGH PARK
NEW DELHI-110003

Swami Ram Swarup Ji, Yogacharya
Ved Mandir, Tikka Lehsar
Yol Bazar, Yol Camp,
Distt. Kangra (H.P.)
Pin 176052 (INDIA)

Most Respected Shri Khushwant Singhji,

Namaste,

Received your loving letter dated 12th August, 2005. I am too thankful to your Good self for acknowledging little bit views of mine, based on vedas. The same is enough for me to enjoy myself from such a high dignitary.

While writing a book in ancient or present times, the name of author is also written but in case of vedas, there is no name of author. However, Ved Mantras tell that vedas are eternal knowledge and emanate from God. I would request you to kindly excuse me for enclosing an answer by me to a question from an aspirant on internet regarding little bit philosophy of origin of Vedas, explaining three main subjects i.e., scientific knowledge of all matters of universe (in Rigved), method of worship of formless God through Yajya-services to parents, aged people, learned; while discharging moral duties (in Samved), description of all pious deeds towards self, family, society, nation and world (in Yajurved). The fourth Ved, i.e., Atharvaved, mostly says about knowledge of whole human body and medicines, including knowledge of God.

I here recollect wordings of your Goodself that every religion says that it is based on science which too I do not agree. But study of four vedas reveals at vedas are totally scientific. My life is too busy to explain, yet I shall try to make an extract of some mantras explaining them in English wherein the present science speaks, whereas Vedas are eternal. And the same will be produced for our kind perusal.

As regards matter of convincing, I would request your Goodself that I have never tried for the same, to such a high dignitary but to mention the fundamentals of the same in your golden feet. So, I request your Honour again and again to kindly not to discontinue your loving letters.

From abroad usually people ask me to explain particular Ved mantras. Recently I have sent on e-mail about 7-8 mantras. I will send its print in my next letter, please. Since all e-mail correspondence is in English, hence it will suit your Excellency.

Your Excellency is the most learned in his field whereas I have been serving people as dust under the feet of public.

Recently, I have given a book to be published of my Shayari (in Hindi), which I wrote about thirty years back which shows the said fact of my life. So, I am not writing the views based on words only but facts.

Though Your Goodself has already cleared about your Hindi knowledge yet I will sure send my Shayari to you in Hindi, when it will be published.

Some of my Sher are given here in respect of your Goodself. Really I am not a Shayar but about thirty years back when I was merged totally in meditation (Asan, Pranayam etc.) then I felt a cruel response from family, relatives and others. Automatically those feelings turned into Shayari which have now been given.

Meri Wafaa Ke Saamne
Teri Ye Bewafai
Gum Pehle Hi Kum Na The
Dil Ne Ek Aur Chot Khai.

Ujdi Zindagi Mein Bahaar Aayee Na Aayee
Khush Raho Ae Chaman Walon
Hamein Karaar Aayee Na Aayee.

Pareshaan Karke Pareshaan Na Samjho Hamein
Hans Hans Ke Zahar Peena Hamein Raas Aata Hai.

Sula Do Mujhe, Sula Do Mujhe
Gahari Nindiya Aa Jaye
Koi Aisee Dawaa Pila Do Mujhe
Sokar Jab Uth Jate Subah
Wahee Din Aur Wahee Kalah
Wahee Nafrat Wahee Kahani
Din Nayaa Sazaa Puraani
Sokar Phir Kabhi Uth Na Sakun
Koi Aisa Jaam Pila Do Mujhe.

Muskuraana Aata Hai Hamein
Kyunki Ro Bahut Chuke
Jeene Ka Dhang Aata Hai
Kyunki Honth See Chuke.

Ik Bekaraari Si Dil Se Jaatee Nahin Kabhi
Kyun Aitbaari Si Mujhko Aatee Nahin kabhi.

I heartily accept your valuable views, "One has to strive oneself to get answers that convince him or abandon the attempt." And I have already expressed my feelings to your Goodself that- "Khushi Se Mar Naa Jaate Gar Aitbaar Hota".

So, I would like to request your Goodself to kindly continue the matter as it gives me always peace when I receive your valuable and experienced views in your handwritten loving letter. However, this may be a shape of story-

One poet (But I am not poet, please) was going in a jungle and he suddenly fell down in a deep trench and could not come out. After sometime a man running towards that side also fell down in that trench. The poet became very happy and started laughing. The man questioned him about the reason to laugh. The poet answered that whenever I start telling my poetry, people always run away but now I have found you and I will tell you all my poetry as you are unable to go out. The man surprisingly and sadly told the poet that actually he was running to escape himself from the poet who was forcefully singing his poetry to the man.

No doubt, a dignitary like you is like an ocean where all rivers, day and night, go to meet. So, naturally a big city like Delhi keeps you always busy. But this is also a fortune. I always remember you, love you and pray to God for long and happy life for Your Excellency. Awaiting your valuable views, on my books, which are always straight-forward, unpartial and always loving and peaceful for me.

Thanks a lot.

Your sincerely,
Swami Ram Swarup, Yogacharya.

स्वामी रामस्वरूप जी के वैदिक प्रवचनों से ली हुई कुछ शिक्षाएँ

1. पाप कर्मों में मन को न लगाओ। उसे रोको। अगर ऐसा नहीं करोगे तो हार जाओगे। बुराई छोड़ने की कोशिश करो। कोशिश करोगे तो उसे छोड़ने में ईश्वर और गुरू भी मदद करेंगे।
2. अन्न कहता है कि जो मेरा दान नहीं करता, उसे मैं खा जाता हूँ।
3. सेवक को नम्र स्वभाव धारण करना चाहिए। घर में भी नम्र स्वभाव धारण कर, क्रोध नहीं करना चाहिए। क्रोधी, लोभी- लालची की गिनती असुर योनि में होती है।
4. जहाँ-जहाँ मन जाता है, उसे वापिस लाओ और ईश्वर और गुरू में लगाओ।
5. वेद मार्ग पर चलकर तपस्या से जीवात्मा, मन को मार कर उसका नामो-निशान मिटा देती है।
6. अगर किसी ने घर का त्याग किया है परन्तु काम-क्रोध, लोभ-मोह, अहंकार आदि का त्याग नहीं किया, तो वह त्यागी नहीं है।

संग्रहकर्ता-
बिपिन बाढेका (सी.ए) मुम्बई

पौर्णमासी और अमावस्या
की आगामी तिथियाँ
(अप्रैल 2019 - सितम्बर 2019)

अप्रैल 2019	मई 2019	जून 2019
शुक्रवार, 5 - अमावस्या शुक्रवार, 19 - पौर्णमासी	शनिवार, 4 - अमावस्या शनिवार, 18 - पौर्णमासी	सोमवार, 3 - अमावस्या सोमवार, 17 - पौर्णमासी
जुलाई 2019	**अगसत 2019**	**सितम्बर 2019**
मंगलवार, 2 - अमावस्या मंगलवार, 16 - पौर्णमासी	गुरूवार, 1 - अमावस्या गुरूवार, 15 - पौर्णमासी शुक्रवार, 30 - अमावस्या	शनिवार, 14 - पौर्णमासी शनिवार, 28 - अमावस्या

महर्षि मनु का सिद्धान्त है कि कर्म करना ही चाहिए - महाभारत वनपर्व

A STORE FOR LADIES

Just She

- ★ Inner Wears For Ladies/Kids
- ★ Ladies Night Suits, Nighties
- ★ Designer Stoles, Pashmina Shawls
- ★ Ladies Suits

Entry for Ladies only

All Branded Items on Reasonable Discount

DUDHA DHARI TEMPLE ROAD, OPP. DOGRA ACADEMY, SHASTRI NAGAR, JAMMU.

TIMING : 11 AM to 8 PM

Divyam Nuts

Happy Baisakhi

DIVYAM NUTS TRADING CO.

DEALS IN : RAISINS (KISHMISH) | WALNUTS | WALNUT KERNELS | ALMOND KERNELS | CASHEW | SAFFRON AND OTHER DRY FRUIT ITEMS.

PHASE 2ND, FRUIT COMPLEX, NARWAL MANDI JAMMU.

M: 9419191371, 9018981119, 7006637806, 789314464

B.R.
9417074752

Sherry
9417027923

HAPPY BAISAKHI

B.R. Enterprises

Wholesale Readymade Garments

J-12-13-15, Dalhousie Road, Pathankot
Ph. : (O) 2227923, (R) 2255892
E-mail : mahajan.sherry@yahoomail.com

Happy Baisakhi

Dr. Mohi Kalsotra
Physician Specialist
MD Medicine

Dr. Vikas Sharma
Child Specialist
ASCOMS, Jammu

Mahesh Khajuria
9103198155

Prachi Medicate

Indira Vihar, Near Amba Theatre (Old Janipur), Jammu.
Ph.: 0191-2538155, Mob.: 94191-48155, 90700-69700

Sushila Rani
(W/o Late Sh. Rattan Chand)
Renu Gupta &
Vijay Choudhary

Chanchal Gupta
W/o Late Sh. C.D. Gupta
Sheetal &
Rakesh Gupta

Happy Baisakhi

Smt. Charu Jamwal
& Family

Dubey's
Family

RAGHAV KHAJURIA
1st APRIL

SHIVAANSH KHAJURIA
20th APRIL

KETVI
29th APRIL

RIDHI MAHAJAN
11th MAY

GAUTAM ABROL
11th SEPTEMBER

JAYENDRA S JASROTIA
20th SEPTEMBER

G. MANISHA
27th SEPTEMBER

MANIT DUBEY
30th SEPTEMBER

NEELAM	9th MAY
RAKESH GUPTA	15th JUNE
DIVYANSHU	23rd JUNE
VEENA	9th JULY
SURBHI	9th JULY
RENU	15th JULY
PARSHOTAM GUPTA	16th JULY
AKUL DEWAN	31st JULY

Birthday Wishes

"ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयामशरदः
शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥"

"समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥"

RADHA - SANJAY SHRIKUL
(17th APRIL)

ANJANA - RAKESH DEWAN
(19th APRIL)

Dr. SUREKHA - RAKESH KOUL
(22nd APRIL)

SEEMA - NARESH KHAJURIA
(2ND MAY)

SHEETAL - RAKESH GUPTA
(11th MAY)

SANIA - VISHAL SHAH
(13th MAY)

NEHA - ARUN MAHAJAN
(18th MAY)

ANUPAMA - K. GURU PRASAD
(24th JULY)

Wedding Anniversary Wishes

Editorial Team

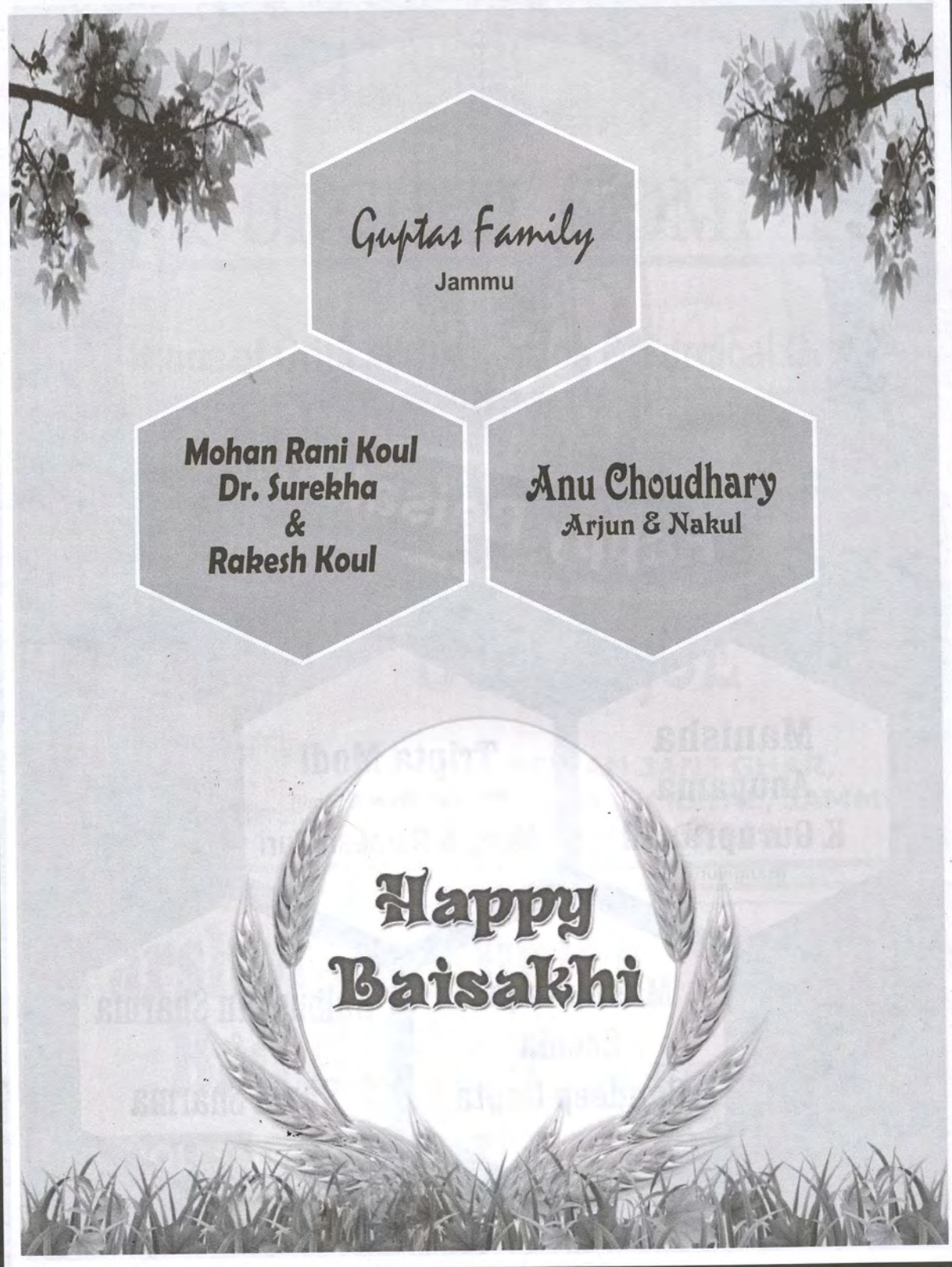
Guptas Family
Jammu
Mohan Rani Koul
Dr. Surekha
&
Rakesh Koul
Anu Choudhary
Arjun & Nakul
Happy
Baisakhi

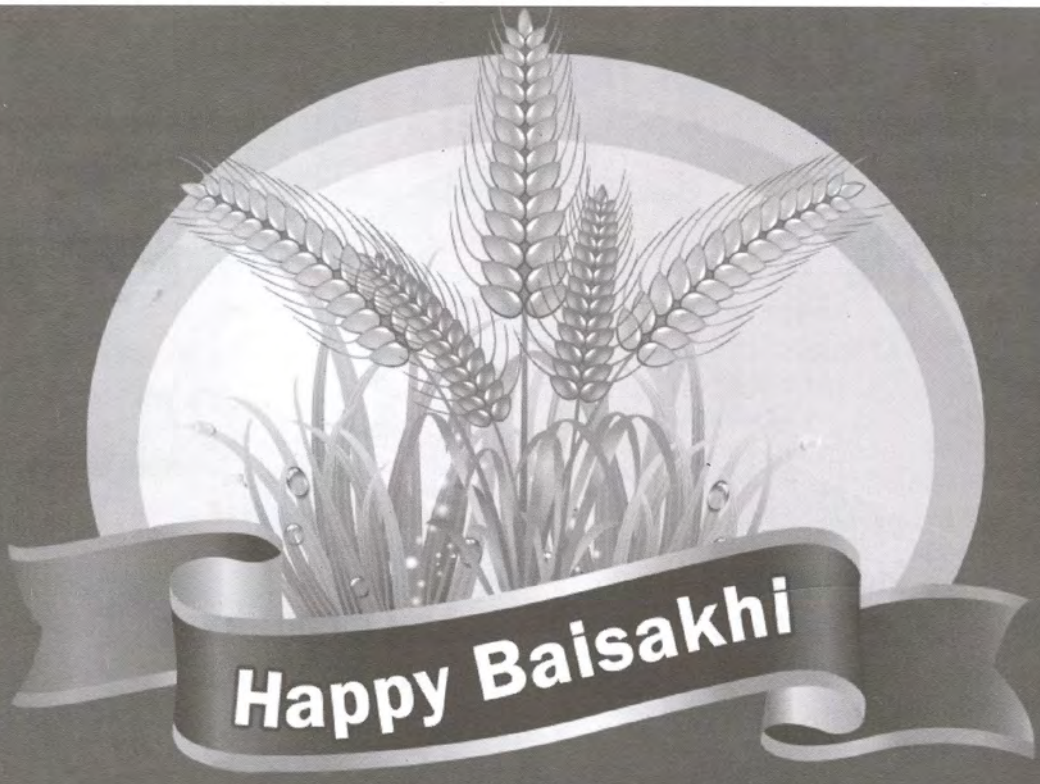

Manisha
Anupama
K Guruprasad
(Bangaluru)

Tripta Modi
(W/o Late Sh. R.K. Modi)
Mona & Ratnesh Puri

Madhu Gupta
Seema
Sandeep Gupta

Kulbushan Sharma
&
Rama Sharma

PROP. : AJAY ANAND

बैसाखी मुबारक

RAJ SURGICAL COMPANY

Deals in :

All Kinds of Critical Care Drugs & Surgical Goods

Pir Mitha, Jammu (J&K). Ph.: 9419183028, 2541571

SPECIALIST IN :

- Designer Suit Stitching
- Designer Blouses
- Machine & Hand Embroidery
- Lehangha Choli
- Western Dresses
- Night Suit & Nighty
- Laces
- Hand Work Material

KAVITA BOUTIQUE

OPP. DEWAN JANJ GHAR,
MANDIR MORH, SARWAL, JAMMU
Mb.: 90861-36713

Parshotam Kumar Brij Bushan

बैसाखी मुबारक

WHOLESALE & RETAILER OF KARYANA ITEMS

Ware House Road, Vikram Chowk, Jammu (J&K)
Ph.: 0191-2454900, Mob.: 94191-29721

ओ३म्

SHIV SANKALAP

TARA CHOWK, BISHNAH, JAMMU
Call : +91 88475 00925, +91 70065 67216

Also Contact for :
Birthday Parties, Kitty Parties

OM KISHORE

CHIEF INSURANCE ADVISOR

AUTHORISED FOR COLLECTION

- LIC PREMIUM
- UNITED INDIA INSURANCE CO.
- ONLINE POLICY PORTAL
- STAR HEALTH & ALLIED INSURANCE

HAPPY BAISAKHI

NEAR PNB, BUS STAND, MANWAL.
OFFICE: 01990-222305
Mob.: 94191-59856

Let us *focus* on Constructive Criticism not Destructive

Sapna

> ***"Nindak nede rakhiye aangan kuti bichchaye; Bin sabun pani bina nirmal karey subhaye"***
> is a famous doha by Kabir Das, the 5th century mystic poet and saint.

The loose translation of this famous doha is that one should keep their critics close by and shelter them as they will keep you grounded by telling your faults to you. Basically critics are your friends. Criticism is part of life as we all indulge in this practice by judging our friends, relatives, children, parents and even strangers.

While constructive criticism can help someone grow in life and become a better human being, destructive criticism can ruin a person's life.

It is said that successful people take criticism in their stride and learn from it. Constructive criticism about someone's work of art, piece of literature or in general about some bad habit can help the receiver in a positive way. In fact, actors, directors, authors, dancers etc look forward to critics' views about their work, which in return benefits everyone.

However, in the current scenario where social media has become such an integral part of our lives, criticising others has become a national hobby. These days everybody has an opinion on everything and criticism is being thrown around without considering about any prospects and consequences.

Innocuous and innocent posts are being trolled mercilessly that many people have exited social platforms. We will not go into the details of negative things that people are writing or saying about each other, but it is important to pause and ponder about the whole situation objectively.

India has always been called the land of saints and peace loving people where

love for each other was a driving force, so what has changed now? Why this malaise of intolerance has crept into our society?

Look at our political parties. It is shameful the way politicians these days indulge in mud-slinging on each other. Even women are not being spared as they are being criticised and insulted in a manner that is disgusting. Gone are the days when decorum was maintained by leaders and criticism used to be healthy, of course, barring few instances.

The places of worship have also not escaped the hate spreaders and it is appalling to see devotees get down to nit-picking and making groups and criticising each others. The whole purpose of seeking divinity has been defeated by such instances.

However, not all criticism is bad. Constructive criticism from your guru, parents, teachers, siblings and friends will keep you away from mistakes and help you grow.

So look for criticism from such quarters and it will help you grow in life and become a better professional and human being. Destructive criticism, on the other hand, demoralises people and makes them bitter. So one should know how to handle criticism without getting overtly sensitive or hyper. However, you should also refrain from judging others on preconceived notions and criticising uncessessary.

In the end, we all should remember what Greek Philosopher and scientist Aristotle said, "Criticism is something we can avoid easily by saying nothing, doing nothing and being nothing."

Editor's Insight

Sapna beti has raised a hot topic of nowadays that to appraise about short-comings of others is really a preach to him to remove the same from him. However, in this case, the individual whose short-comings are being disclosed should be of the nature of being down to earth otherwise the matter may turn into fight and argument. Sapna beti has described about the celebrities and no doubt, they are artists. It shall not be out of place to mention here that artist starts to learn right from the beginning of his childhood and artists are mostly advised in the beginning that more they are criticized more will they gain. So, such criticism very well suits the artists and learned persons but not others. For example- Political parties usually criticize each other but in their criticism, pride, taunting, ravages of hatred are clearly seen, which should not be there. India is a country of Rishi-

Munis, learned Rajrishis etc. but such smooth tradition of love and brotherhood between political parties could not be maintained and above quoted baseless criticism is being spread even by shouting abuses and making personal remarks etc. Whether our present politicians can get success to project India as "Golden Bird" and "Spiritual Master of the World" by indulging in worst criticism as quoted above.

Dear daughter Sapna has already raised the above issue stating that India is the land of saints and peace loving people but I cannot restrain myself from saying that what to talk about normal public, here, most of the saints also have acid tongue and throw mud on each other.

When protector has a mood of finishing the public then helpless public can do nothing except facing sorrows all the time. So, such criticism from political parties is not required. Dear daughter Sapna, has written a very good article which is full of knowledge about the subject criticism. So, every reader must read her complete article attentively.

VIV

MEDICAL SCIENCE IN ATHARVAVED

Kand 3, Sukta 11 of Atharvaved preaches that-

1.) Daily agnihotra with ved mantras provides us with ill-free life and hundred years of age.

2.) This tapasya increases divine knowledge and enables us to control the senses and perceptions.

3.) If one performs daily Yajyen and does prannayaam then the reason of early death vanishes away, every disease which causes reason for death is also destroyed.

4.) If we perform daily Yajyen then during the old age, we acquire all the beneficial goods to get hundred years of age because the power of vital airs (prann and apaan) enables every part of body to attain hundred years of age.

VIV

विद्वानों का संग

अंजना दीवान
इंडोनेशिया

विद्वानों का संग जहाँ नित्य होगा।
अमृत बरसता वेदों से होगा।।
(स्वामी राम स्वरूप जी)

विद्वानों का संग सूर्य के प्रकाश जैसा है। कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे रात के अंधेरे में कुछ भी ठीक से दिखाई नहीं देता और सूर्य का उजाला होते ही सबकुछ साफ–साफ दिखाई देने लगता है वैसे ही विद्वानों की संगत से हमारे अन्दर ज्ञान का प्रकाश होने लगता है, ईश्वर के स्वरूप आदि को जानने लगते हैं और झूठी पूजा, पाखण्ड और अन्धकार से परे हटने लगते हैं। अब प्रश्न यह है कि यह विद्वान् जन कौन हैं और इनकी पहचान कैसे हो? अगर हम वेदवाणी सुनेंगे तो यह जान जाएँगे कि यह विद्वान् जन ईश्वर का ही स्वरूप हैं और वेदवाणी इनके अन्दर प्रकट है इसलिए वेदों में इन्हें मन्त्रद्रष्टा एवं ***'रूपेण इन्द्रः'*** आदि कहा है। अर्थात् वे ईश्वर का स्वरूप हैं, शान्त, एकान्त प्रिय एवं सदैव सत्य वाणी बोलते हैं। मैंने स्वयं अनुभव किया है कि विद्वान् जन यज्ञ में ईश्वर के ध्यान में लीन सदैव वेद मन्त्रों से ही ईश्वर की स्तुति करते हैं।

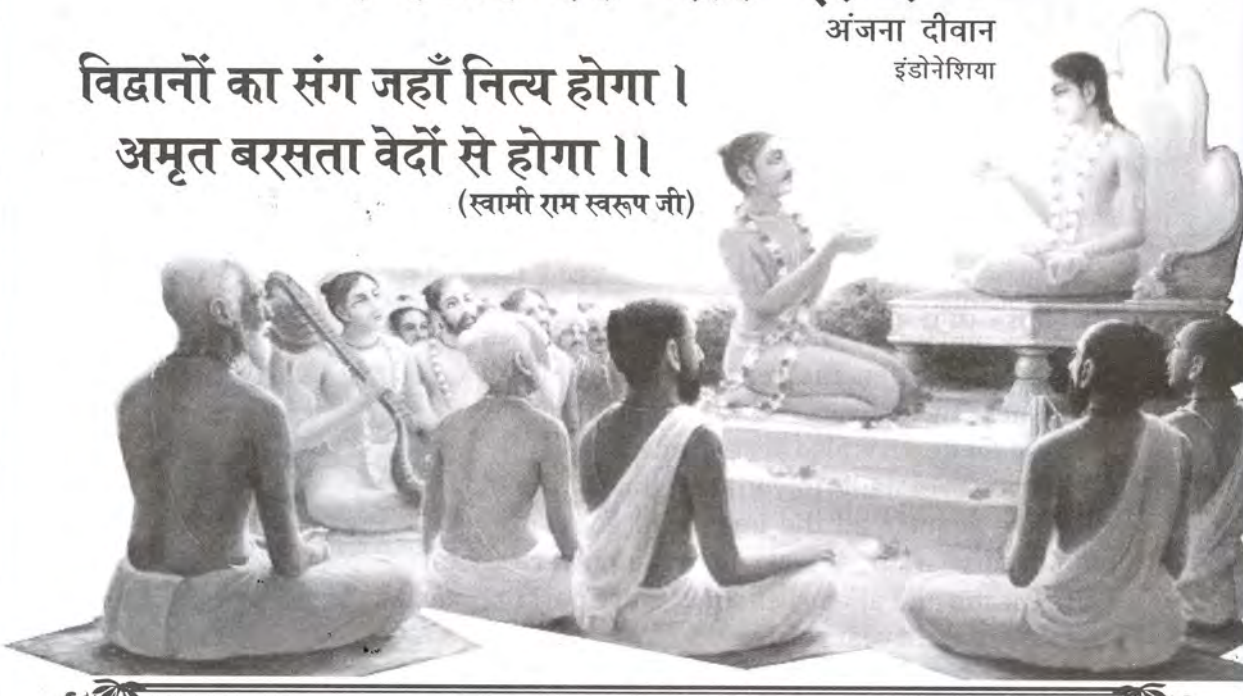

यदि दण्ड का प्रयोग कठोरता से किया जाए तो सब लोग द्वेष करने लगते हैं - चाणक्य

वस्तुत: आज के युग में विद्वानों की पहचान होना उतना ही दुर्लभ है जैसे ज़मीन पर बैठकर चाँद पर कदम रखने की इच्छा करना। पहचान से मुझे अपने पिताजी की याद आती है। पिताजी ने बचपन में ही हम सब बहन–भाइयों को गुरूजी ***(स्वामी राम स्वरूप जी)*** से दीक्षा दिलाकर जोड़ दिया था। उसके लिए मुझे याद है कि हमारे कई रिश्तेदारों ने आपत्ति भी की थी कि बच्चे अभी बहुत छोटे हैं इन्हें अभी दीक्षा दिलाना उचित नहीं है। परन्तु पिताजी ने कहा कि सच्चा विद्वान् करोड़ों में कोई बिरला ही होता है, उसका तो दर्शन करना भी दुर्लभ है और अगर उसकी शरण मिल जाए तो उसे छोड़ना नादानी होगी। पिताजी का भाव था जो सत्य से जुड़ गया, उसका मनुष्य जन्म सफल हो गया। महाराज जी हमेशा अपने प्रवचनों में यह कहते हैं कि वह स्वयं प्रवचन नहीं अपितु ईश्वरीय वाणी वेद से ईश्वर के नियम सुना रहे हैं । उनसे हमने जाना कि जिस प्रकार हर देश का अपना एक संविधान है उसी प्रकार पृथिवी का संविधान चारों वेद हैं जिस कारण सम्पूर्ण सृष्टि सुचारु रूप से कार्य कर रही है। लगातार कई वर्षों तक जब बार–बार गुरूजी के मुख से वेद वाणी सुनने पर, मन और बुद्धि शुद्धिकरण की ओर अग्रसर होने लगे तो इस वाणी के कुछ–कुछ मर्म समझ में आने लगे। उसके लिए सर्वप्रथम मैं अपने योगाचार्य और मन्त्रद्रष्टा ऋषि स्वामी रामस्वरूप जी के चरणों में कोटि–कोटि प्रणाम करती हूँ कि आज ईश्वर और उसके काव्य वेद के बारे में जो भी जानती हूँ, वह सब स्वामी जी की असीम कृपा से है। स्वामी जी से ही हमने सत्य की परिभाषा को जाना कि प्रत्यक्ष में हम जिस संसार और जीव–जन्तुओं को देख रहे हैं तथा सत्य मानते हैं यथार्थ में वह सत्य नहीं है क्योंकि जो चीज़ बनी है उसका अन्त निश्चय ही है। सत्य तो वह है जिसका कभी अभाव नहीं होता, जो भूत, वर्तमान, भविष्य; तीनों काल में एक समान रहता है। तो फिर सत्य क्या है?वह सत्य ईश्वर है, जो स्वयंभू है, जो बनता–बिगड़ता नहीं है, पृथिवी रचना, संहार और प्रलय–काल, तीनों कालों में हमेशा रहता है तथा ससांर के सब पदार्थ–जड़ और चेतन, हमेशा उसी के संरक्षण में रहते हैं। उसी एक ईश्वर

और उससे उत्पन्न वेदवाणी को ही सत्य जानें।

विद्वानों के संग से यह मर्म भी समझ में आने लगा कि वेद कोई धर्म या मज़हब नहीं हैं, यह ईश्वर से उत्पन्न ज्ञान है। रोज़ की दिनचर्या में हम जो भी कार्य करते हैं– नहाना–धोना, खाना बनाना, कपड़े धोना इत्यादि, यहाँ तक कि हमारे घरों में विज्ञान कि दी हुई वस्तुएँ–फ्रिज, टी.वी, मिक्सी आदि, सबका ज्ञान हमारे पूर्वजों को विद्वानों ने वेदों से ही दिया है। यजुर्वेद में कर्मों का ज्ञान, गणित विद्या का ज्ञान, ऋग्वेद में विज्ञान का ज्ञान, सामवेद में ईश्वर की उपासना, योगाभ्यास और संगीत का ज्ञान, अथर्ववेद में औषधियों का ज्ञान दिया है। उस ईश्वर ने वेदों में तिनके से लेकर ब्रह्म तक का ज्ञान दिया है। 'ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा– यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम' ***(यजुर्वेद मंत्र 32/6)*** मंत्र में यह स्पष्ट है कि उग्र रूप वाले द्युलोक तथा पृथिवी लोकों को उस परमेश्वर ने ही दृढ़ किया है और अन्तरिक्ष में विमान चलाने का ज्ञान ईश्वर ने ही वेदों में दिया है। ***यजुर्वेद मंत्र 13/4*** ओ३म् हिरण्यगर्भ... स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम। मंत्र में यह भाव स्पष्ट है कि वो प्रकाश स्वरूप ईश्वर ही सब पदार्थों को ज्योति दे रहा है और वही ईश्वर संसार के सब पदार्थों का मालिक था, है और आगे भी रहेगा और उसी परमेश्वर ने पृथिवी और द्युलोक को धारण किया हुआ है। ***ऋग्वेद मन्त्र 1/1/1*** में यह स्पष्ट है ओ३म् अग्नि मीड़े– ***''रत्नधातमम्''*** जो ईश्वर यज्ञ का दाता है, सब ऋतुओं में पूजनीय है, वो ईश्वर ही संसार के सब जीवों और पदार्थों का पुरोहित अर्थात् मालिक है और संसार में सब रत्न हमें उस ईश्वर की ही देन हैं। आज विद्वानों की कमी के कारण कौन यह

रहस्य खोले। आज जिस भी आविष्कार या खोज पर वैज्ञानिक अपनी मोहर लगा रहे हैं वो ज्ञान तो पहले से ही वेदों में है। गुरुजी के साथ बार–बार यज्ञ करने से यह भी समझ में आने लगा कि भिन्न–भिन्न नाम वाले अलग–अलग ईश्वर नही हैं बल्कि अनंत नामों से जानने योग्य वो निराकार ईश्वर सिर्फ एक ही है। उस ईश्वर के अनंत गुणों के कारण ही यह विद्वान् जन उस निराकार ईश्वर को अनेक नामों से पुकारते हैं। उसका नाम 'विष्णु' उसके गुण के कारण है अर्थात् वो ईश्वर जो संसार के कण–कण में व्यापक है, इसीलिए उसका नाम विष्णु है। उसका नाम 'गणपति' इसलिए है क्योंकि वो संसार के सब गणों का मालिक है। उसे 'शिव' इसलिए कहा है क्योंकि वो ईश्वर सब जीवों का हित/कल्याण करने वाला है। वो ईश्वर 'इन्द्र' है सब ऐश्वर्य से युक्त है, वो ईश्वर 'वसु' है– सबको बसाने वाला है। वो ईश्वर 'महादेव' है– सब देवों का देव है। 33 जड़ देवताओं को बसाने वाला महादेन सिर्फ एक ही है और ऐसे अनंत गुणों वाले ईश्वर 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' की यज्ञ में आहुति डालकर ही उपासना की जाती है। जब से यह ज्ञान गुरु कृपा से बुद्धि में प्रवेश किया है सारे पाखण्डों से और मनगढ़न्त पूजा से मन छूट गया है।

संपादक के विचार

अन्जना बेटी ने परमेश्वर के स्वरूप एवं विद्वानों के संग से ईश्वर प्राप्ति आदि विषय को लेकर एक ज्ञानवर्धक लेख लिखा है। हमें ईश्वर से उत्पन्न चारों वेदों पर किसी विद्वान् के आश्रय में रहकर गहन अध्ययन मनन–चिन्तन और तर्क–वितर्क से सत्य स्थापित करके वेदों में कही शिक्षाओं को आचरण में लाने की आवश्यकता है। यह ईश्वर का आदेश है। यदि परमेश्वर केवल सृष्टि की रचना करता और हमें जीवन दान

देता तब तो मनुष्य जाति में अज्ञान बढ़ने के कारण विषय–विकार, हिंसा, चोरी, डकैती आदि अनेक अवगुणों के उभरने के कारण जीना दूभर हो जाता। आज भी यदि हम विचार करें कि एक तो माता–पिता द्वारा सन्तान उत्पन्न करना है, यह कोई बड़ी बात नहीं है। क्योंकि सन्तानें तो पशु–पक्षी, कीट–पतंग आदि सभी की उत्पन्न होती हैं। परन्तु मनुष्य जाति का धर्म कहा है कि वह सन्तान उत्पन्न करके, आरम्भ में माता–पिता उसे स्वयं ज्ञान दें और छः वर्ष की आयु में उसका उपनयन संस्कार करके वेद के विद्वान् आचार्य से वैदिक शिक्षा लेने की व्यवस्था करें। साथ–साथ स्कूल, कालेज आदि की पढ़ाई–लिखाई आदि में भी उसे प्रवीण करें। तब ही वह बालक अथवा बालिका माता–पिता, गुरु की सेवा आदि करके एक गुणवान्, सत्य से जुड़े हुए, चरित्रवान् तथा धर्माचरण वाले व्यक्ति बनकर स्वयं भी सुखी रहेंगे तथा समाज एवं देश को भी सुदृढ़ बनाँएगे। अन्यथा बुरे व्यसनों में फंसकर, कुल–कलंक बनकर कुल एवं देश को बदनाम करेंगे। बस यही बात आज हमारे विशेषकर भारतवर्ष की सरकार एवं जनता को समझनी चाहिए कि ईश्वर सबका माता–पिता है। उसने सृष्टि रचकर हमें उत्पन्न करके जीवन का साधन समझने के लिए वेद विद्या उत्पन्न की। जैसा कि ***यजुर्वेद मन्त्र 31/7*** में कहा कि ईश्वर ने सृष्टि रची, तत्पश्चात् ईश्वर से चारों वेदों का ज्ञान उत्पन्न हुआ और चार ऋषियों के हृदय में प्रकट हुआ। इस सत्य को ***मनु स्मृति श्लोक 1/23*** में इस प्रकार कहा– कि परमात्मा ने जगत् में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि व्यवहारों की सिद्धि के लिए अग्नि, वायु, रवि एवं अंगिरा से ऋग, यजु, साम एवं अथर्व वेदों को दोह कर प्रकट किया।

परन्तु आज समस्या यह है कि मनुष्य इन ऋषि प्रणीत, संस्कृत में लिखे ग्रन्थों

अथवा ईश्वर से उत्पन्न वेदों का अधययन किसी विद्वान् के आश्रय में रहकर प्राप्त नहीं करता और इस प्रकार जनता अविद्याग्रस्त/अज्ञानग्रस्त होकर अन्धविश्वास आदि में फंसकर जीवन व्यर्थ गवां देती है। अविद्याग्रस्त मनुष्य अधिकतर दु:खमय जीवन व्यतीत करता है। परमेश्वर ने चारों वेदों में स्पष्ट आदेश दिए हैं कि प्रत्येक मनुष्य विद्वानों से वेदविद्या ग्रहण करके अपने मन और बुद्धि को शुद्ध करे। उदाहरणार्थ– ***यजुर्वेद मन्त्र 19/39*** का उपदेश है कि हे ज्ञानी, विद्वान्! जैसे विद्वान् और धर्मात्मा लोग विज्ञान से मुझे पवित्र करें और मेरी बुद्धियों को पवित्र करें, वैसे तू मुझे पवित्र कर। भाव है कि माता–पिता का कर्तव्य है कि वे पुत्र और पुत्रियों को ब्रह्मचर्य तथा सुशिक्षा से विद्वान् और विदुषी एवं सुशील बनावें, इत्यादि।

अन्जना बेटी ने इसी विषय पर पाठकों का ध्यान खींचा है कि मनुष्य वेद के ज्ञाता, विद्वानों का संग पाकर स्वयं विद्वान् एवं विदुषी बनें और सुखमय दीर्घायु प्राप्त करे। दूसरा विषय यह भी उठाया है कि हम परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव वेदों से जानें क्योंकि ईश्वर ने अपने स्वरूप को केवल चारों वेदों में प्रकट किया है जिसका तनिक सा वर्णन अन्जना बेटी ने अपने लेख में किया है। हम निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्ति–मान् उस ईश्वर की पूजा करें जो संसार की रचना करके उसका पालन करता है और निश्चित समय पर संहार करके उसको पुन: रच देता है। अन्य की उपासना ना करें। यही वेदों में ईश्वर का उपदेश है। VIV

वृद्ध की सेवा ही ब्रह्मोपासना

डा० प्रवीण कुमार श
आचार्य एवं विभागाध्य
औषधिगुण शास्त्र विभ
श्री लाल बहादुर शास्त्री राजक
आयुर्विज्ञान महाविद्याल
मण्डी स्थित नेरचौक, हिमाचल प्रदे

किसी प्राणी का जन्म ब्रह्माण्ड की एक विशिष्ट घटना है। प्राणियों में भी सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है एक मनुष्य का जन्म। यह इसलिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि मनुष्य इस संसार में एक विशेष यन्त्र, बुद्धि के साथ जन्म लेता है जो एक अत्यन्त शक्तिशाली माध्यम है। बुद्धि के कारण ही मनुष्य न केवल इस संसार में जीवन यापन के लिये कर्म करता है वरन वह इस सृष्टि का अनुसंधान भी करता है और उस अनुसंधाएन के फलस्वरूप ब्रह्मप्राप्ति का प्रयास भी करता है। मनुष्य का इस सृष्टि के साथ सम्बन्ध केवल मन और बुद्धि के द्वारा ही होता है अर्थात् मन और बुद्धि द्वारा किये गये अनुभव को ही मनुष्य सृष्टि रूप में जानता है।

मनुष्य के जीवन के प्रारम्भिक काल में उसकी बुद्धि द्वारा अविकसित होती है जिस कारण उसका इस सृष्टि के साथ सम्बन्ध भी विकसित नहीं होता। यही कारण है कि बाल्यावस्था में बच्चा सृष्टि से अनभिज्ञ, अबोध, सरल, भोला–भाला व निर्भीक, जीवन जीता है और अपनी आवश्यकताओं के लिए पूर्णरूप से अपने माता–पिता व अभिभावकों के ऊपर निर्भर रहता है। बाल्यावस्था में बुद्धि के अविकसित होने के कारण आत्मा अपने आप को प्रकट

करती है और हमें बच्चों के व्यवहार में आत्मा के दर्शन होते हैं।

जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है, उसकी बुद्धि का विकास होता है, वह प्रकृति को अनुभव करना आरम्भ करता है। यह प्रकृति उसकी बुद्धि के विकास में सहायक बन उसे अपने अनुरूप ढालने का प्रयत्न करती है और इसी प्रकृति के अनुभवों के मध्य विकसित हो कर बुद्धि के अन्दर प्रकृति को अपने अनुरूप ढाल लेने का सहज स्वभाव उत्पन्न होता है। यही युवावस्था है जिस काल में शास्त्रों में ब्रह्मचर्य आश्रम में रहकर जीने की संस्तुति की गयी है। इस काल में मनुष्य की जिज्ञासा चरम पर होती है। वह प्रकृति के हर गूढ़ रहस्य को जानने के लिये आतुर रहता है। यौवन से आच्छादित एक मनुष्य की इस आतुरता के पीछे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एक ही भावना होती है, वह है प्रकृति पर नियन्त्रण।

एक दूसरे पर नियन्त्रण के इस छद्म संघर्ष में बुद्धि और जड़ प्रकृति एक दूसरे से पूर्ण रूप से संलग्न हो जाते हैं। मनुष्य अपने आप को संसार का अंग मानकर इसके साथ व्यवहार करने लगता है अर्थात् इसमें लिप्त हो जाता है। इस लिप्त अवस्था से ही मोह की उत्पत्ति होती है। इस मोह के फलस्वरूप मनुष्य के अन्दर इस प्रकृति पर अपने स्वामित्व की निरन्तरता को बनाये रखने के लिये अपने वंश की निरन्तरता को बनाये रखने की इच्छा उत्पन्न होती है और वह इसके लिये प्रयत्नशील हो जाता है। यही गृहस्थ काल है। मनुष्य का यह व्यवहार अन्य प्राणियों से भिन्न है। जो कभी प्रकृति पर स्वामित्व की निरन्तरता के लिये वंश वृद्धि नही करते वरन एक नैसर्गिक भावना के वशीभूत प्रजनन करते हैं।

शनैः शनैः मनुष्य का शरीर पुराना होने लगता है, उसमें अनेकों विकार उत्पन्न होने आरम्भ हो जाते हैं, उसकी बुद्धि भी इसी जड़ शरीर का अंग होने के कारण जीर्ण हो कर शिथिल हो जाती है। बुद्धि की इस शिथिलता के परिणाम स्वरुप ही मनुष्य का इस संसार के साथ सम्बन्ध भी कमजोर होने लगता है। जिसके कारण उसके मन में संसार से विरक्ति की भावना उत्पन्न होती है। यह काल है जिसे वृद्धावस्था कहा जाता है। इस काल के आते–आते मनुष्य अपने सांसारिक

उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर सामाजिक और अनुवांशिक रूप से मुक्त हो चुका होता है, उसके वंश की निरन्तरता सुनिश्चित हो चुकी होती है। यदि युवावस्था में ही मनुष्य के अन्दर संसार से विरक्ति उत्पन्न हो जाये तो सृष्टि की निरन्तरता सम्भव नहीं हो पायेगी, सृष्टि समाप्त हो जायेगी। अत: सृष्टि में लिप्तता, वंश की निरन्तरता की इच्छा और नीयत समय पर बुद्धि की जर्जरता से उत्पन्न विरक्ति, ब्रह्म नियमानुसार ही है।

आधुनिक काल में बुद्धि के जीर्ण हो जाने के कारण मनुष्य के व्यवहार में आये परिवर्तन को अच्छा नहीं माना जाता और इसी कारण वृद्ध मनुष्य के साथ आज का समाज अच्छा व्यवहार नहीं करता। वृद्ध मनुष्य को अनुपजाऊ माना जाता है और क्योंकि उनके शरीर में बीमारियाँ अधिक होती हैं और वे अपने–आप अपनी देखभाल में असमर्थ हो जाते हैं। इसी लिये उनको समाज अपने ऊपर बोझ समझने लगता है।

बुद्धि के क्षीण होने से मनुष्य का इस संसार के साथ सम्बन्ध तो क्षीण हो जाता है, परन्तु क्योंकि आत्मा अजर है इसीलिये बुद्धि के जीर्ण होने पर वह प्रखर होती है। वृद्धावस्था मनुष्य जीवन का अन्तिम काल होता है, जैसे–जैसे शरीर जीर्ण होता जाता है वैसे आत्मा को इस सत्य का बोध होने लगता है कि अब ब्रह्म दर्शन कर, ब्रह्म में विलीन होने या नया शरीर धारण करने का समय निकट है। इसी कारण मनुष्य के जड़

शरीर की यौवनावस्था में संस्कारहीन बुद्धि द्वारा प्रकट होने से वंचित की गयी आत्मा, वृद्धावस्था में अपने आपको प्रकट कर पाती है। जैसे–जैसे मनुष्य का शरीर अपनी मृत्यु के निकट पहुँचता है, आत्मा प्रखर होती जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि जिन लक्षणों को समाज

वृद्धावस्था के अपलक्षण समझता है, जिन लक्षणों के कारण समाज, वृद्धावस्था को अपने ऊपर बोझ समझता है वही लक्षण वृद्धावस्था के गुण हैं। क्योंकि जिन कारणों से वे लक्षण उत्पन्न होते हैं उन्हीं कारणों से वृद्धावस्था काल में मनुष्य देवत्व के समीप पहुँचता है। इन्हीं सब कारणों के फलस्वरूप प्राकृतिक न्याय के अनुसार संसार के सभी न्यायालयों में मृत्युकाल की उद्घोषणा को सत्य मान कर स्वीकार किया जाता है, यह माना जाता है कि मृत्यु के निकट अवस्था में मनुष्य सत्य के मार्ग का अनुगमन करता है और ऐसा केवल वही प्राणी कर सकता है जो आत्मा के आधीन हो। ***मुण्डक उपनिषद् में कहा है:–***

'येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्''

अर्थात् वे ऋषि– मुनि, जिन्होनें अपनी इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर ली है, जिस मार्ग पर आवागमन करते हैं वही सत्य का निवास स्थान है। इच्छाओं पर विजय केवल मन और बुद्धि पर विजय प्राप्ति के द्वारा ही की जा सकती है अर्थात् सत्यगामी ऋषि वही होते हैं जिनका मन और बुद्धि पर नियंत्रण हो और जो आत्मा द्वारा निर्देशित व्यवहार करते हों। ऋषि–मुनि ऐसी स्थिति को एक विशेष अनुशासित प्रक्रिया के द्वारा सतत् अभ्यास कर, प्राप्त करते हैं जो अत्यंत कठिन और दुर्लभ साधन है जिसे योग कहते हैं। यह एक कृत्रिम प्रक्रिया है और यह स्थिति स्थायी नहीं है वरन् योग की उस प्रक्रिया से बाहर आते ही यह स्थिति समाप्त भी हो सकती है जैसा कि कठोपनिषद् में कहा गया है कि योगो हि प्रभवाप्ययो अर्थात् आत्माधीन स्थिति में परिवर्तन होता रहता है। परन्तु वृद्धावस्था में यह स्थिति एक प्राकृतिक अवस्था है जिसमें परिवर्तन केवल एक ही दिशा में होता है और वह यह है कि वृद्धावस्था में मनुष्य मृत्युकाल तक निरन्तर आत्मा के अनुशासन में प्रवेश कर उसमें आगे बढ़ता जाता है। हमारे शास्त्रों में इसीलिये वर्णन है कि जहाँ भी समाज के लिये कोई शुभ निर्णय की प्रक्रिया चले उस स्थान पर वृद्ध मनुष्यों की बात मानी जानी चाहिये क्योंकि वे सत्यगामी व समाज के हितैषी होते हैं जैसा ***ऋषि वेदव्यास*** ने महाभारत काव्य में कहा है–

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः, न

ते ये न वदन्ति धर्मः।
नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति, न तत्सत्यम् यच्छलेनानुविद्धम्।।

अर्थात् वह सभा शुभ नहीं कहलाती जिसमें वृद्ध न हों, वे वृद्ध नहीं कहलाते जो धर्म का अनुसरण नहीं करते, वह धर्म नहीं कहा जा सकता जो सत्य पर आधारित न हो और वह सत्य नहीं हो सकता जो छल से आच्छादित हो।

यही कारण है वृद्ध मनुष्यों के साथ निवास का हमारे व्यवहार पर सत्संग जैसा ही प्रभाव होता है। जब हम शारीरिक रूप से जर्जर मनुष्य की सेवा करते हैं तो हम एक निश्छल, निष्कपट चेतन आत्मा के सान्निध्य का सुख वा पुण्य प्राप्त करते हैं। घरों के अन्दर बूढ़े व्यक्तियों का निवास घर में मन्दिर स्थापित करने जैसा ही फलदायी होता है। पूजा–पाठ तो हम दिन में एक या दो बार करते हैं अर्थात् पूजा–पाठ के द्वारा तो कुछ समय के लिये ही हम देव सान्निध्य का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं परन्तु घर में वृद्धों के निवास से हमें बिना किसी प्रयत्न के ही निरन्तर ब्रह्मचेतना के सान्निध्य का पुण्य प्राप्त होता है। हम देवी देवताओं की पूजा करते हैं, उपवास करते हैं, कुम्भ में जाकर कल्पवास करते हैं क्योंकि इससे हमें ब्रह्म सामिप्य का पुण्य फल मिलता है परन्तु वृद्ध व्यक्ति तो वह देवदूत है

जिसकी आत्मा का कुछ ही समय पश्चात् ब्रह्म से साक्षात्कार होने वाला है तो उस आत्मा की सेवा सुश्रूषा का हमें क्या फल मिलेगा हम भली–भाँति समझ सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन काल में साधु सन्त रहा है, तो वह तो वृद्धावस्था में साक्षात् देवतुल्य ही होगा परन्तु यदि किसी व्यक्ति ने अपने जीवन काल में कोई पुण्यकर्म नहीं भी किये हैं तब भी वह देवदूत तो है ही क्योंकि शरीर

त्यागने के पश्चात् क्षण भर के लिये ही सही उसे परमब्रह्म से साक्षात्कार का अवसर अवश्य प्राप्त होगा।

वृद्ध व्यक्तियों के सामिप्य का कोई निर्धारित नियम नहीं है उनके सान्निध्य का पुण्य अनेक रूपों में प्राप्त किया जा सकता है। क्योंकि ***वृद्ध व्यक्ति नर रूप में नारायण है*** इसीलिये संसार के नियमानुसार उनके शरीर व मन की अपनी कुछ विशेष आवश्यकतायें होती हैं। वृद्धों के सान्निध्य का सर्वोत्तम फल प्राप्त करने का साधन है उनकी शारीरिक व मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति में उनका सहयोग करना। यह सहयोग हम उन वृद्धों का तो कर ही सकते हैं जो हमारे परिवार का अंग हैं। पर यदि हम इतने भाग्यशाली नहीं हैं और हमारे परिवार में कोई बूढ़ा व्यक्ति नहीं है तो हम अपने आस–पास के घरों में रहने वाले वृद्धों का सहयोग कर पुण्य प्राप्त कर सकते हैं या ऐसे वृद्ध व्यक्ति जो एकाकी हैं, को अपने घर में रख कर उनके साथ रहने का फल प्राप्त कर सकते हैं।

1. बूढ़े व्यक्तियों के साथ ***वार्तालाप*** करें और इस वार्तालाप के द्वारा उनके जीवन भर के अनुभवों को समझने का प्रयत्न करें। उनके अनुभव हमसे भिन्न हो सकते हैं परन्तु वे एक सम्पूर्ण जीवन को जी कर उत्पन्न अनुभव हैं जो अमूल्य है।
2. बूढ़े व्यक्तियों की ***साफ–सफाई*** में उनका सहयोग करें क्योंकि प्राय: देखा गया है कि वे अपनी साफ सफाई के प्रति उदासीन हो जाते हैं जिसका उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
3. उन्हें समय पर, आसानी से पचने योग्य, ***पौष्टिक भोजन*** करायें। प्राय: देखने में आता है कि कई बूढ़े व्यक्ति अपने खाने–पीने का उचित ध्यान नहीं रख पाते जिसके कारण उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता।
4. ऋतु अनुसार उनके शरीर के तापमान का ध्यान रखें व उन्हें चरम तापमान से बचायें क्योंकि वृद्धावस्था में हमारे ***शरीर के तापमान*** को बनाये रखने की शक्ति भी क्षीण हो जाती है, साथ ही साथ गर्मी–सर्दी को अनुभव करने की क्षमता में भी कमी आ

जाती है।

5. बूढ़े व्यक्तियों को उनकी रुचि अनुसार ***साहित्य पढ़कर सुनायें।*** सामान्यतः देखने में आता है कि वृद्धावस्था में धार्मिक व आध्यात्मिक साहित्य में रुचि बढ़ जाती है परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि वे हर समय एक प्रकार की ही पुस्तक सुनना पसन्द करें।
6. उन्हें अपने आस–पास के ***खुले स्थान, पार्क आदि में घुमानें ले जायें।*** यह अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि वृद्धावस्था में शरीर दुर्बल हो जाने के कारण वे लोग स्वयं बाहर निकलने से बचने लगते हैं और इस कारण एक ही कमरे में बन्द हो जाते हैं।
7. उन्हें ***तीर्थाटन व सत्संग*** के स्थानों पर ले जायें। इससे वृद्ध व्यक्ति के साथ–साथ हमें स्वयं भी पुण्य की प्राप्ति होती है। यदि वृद्ध व्यक्ति की कोई विशेष इच्छा नहीं है तो यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि तीर्थस्थान या सत्संग का स्थल कितनी दूर या पास का है या उसकी कितनी मान्यता है।
8. बूढ़े व्यक्तियों को ***पूर्ण सम्मान*** दें। जैसे पहले वर्णन किया गया है कि वृद्ध व्यक्ति देवदूत के समान है तो हमें उन्हें अपने सम्मानित देवदूत की भाँति ही सम्मान देना चाहिये। यह महत्त्वपूर्ण है कि यह सम्मान उस व्यक्ति की मान्यताओं के अनुसार हो न कि हमारी मान्यताओं के।

VIV

TRUTH AND ILLUSION

Swami Ram Swarup 'Yogacharya'

"Vidyaam Chaavidyaam Cha Yastadvedobhayam Saha,
Avidyayaa Mrityum Teertva Vidyayaamritamashnutey."

Again, this Mantra preaches difference between alive and non-alive matters because the learned of Vedas who has known the true, eternal form of vidya i.e. alive God and souls and simultaneously knows avidya i.e. non-alive matters like human-body etc., he only makes the best use of the said matters. Otherwise, the person will be indulged in illusion/blind faith.

Word Meaning-

(Yaha) The learned of Vedas, who ***(Ved)*** knows ***(Vidyaam)*** vidya i.e. alive Brahma and souls and the means of knowing the same. And ***(Tat Ubhayam Saha)*** simultaneously he knows ***(Avidyaam)*** non-alive matters like human-body etc. and the means of knowing and using the same, he through hard work by ***(Avidyayaa)*** non-alive matters i.e. human-body etc. and ***(Teertva)*** crossing over ***(Mrityum)*** the sorrows and fear of death, he ***(Vidyayaa)*** from eternal, true knowledge, generated within pure heart, mind and intellect by following Vedas, ***(Ashnutey)*** attains ***(Amritam)*** eternal and everlasting Almighty God/salvation.

Meaning

The learned of Vedas, who knows vidya i.e. alive Brahma and souls and the means of knowing the same and simultaneously he knows non-alive matters like human-body etc. and the means of knowing and using the same; he through hard work by non-alive matters i.e. human body etc., and crossing over the sorrows and fear of death, he from eternal, true knowledge, generated within the pure heart, mind and intellect by following Vedas, attains eternal and everlasting Almighty God/salvation.

Idea

Here Vidya means alive God and souls who are realized by following vedic path. ***God has unlimited knowledge whereas alive soul has limited knowledge of non-alive and***

Nobody is immortal, then why to feel sorrow for inevitable (Mahabharat)

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयँ सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नेते ॥

alive matters. This fact should be known that the kind of utilization achieved from soul is different from that which can be achieved from non-alive matters. Therefore, alive matter has quite different qualities from non-alive matters. So, those who, in the absence of knowledge of Vedas, are incapable to differentiate between the qualities of alive and non-alive matters, they may do idol worship at their own discretion. But as far as vedas are concerned, vedas do not promote idol worship and Avtarwad (incarnation). That is why, God in vedas, preaches that everybody should make contact with learned Acharya of Vedas to follow vedic knowledge, to do practice of Ashtang Yog, to do Yajyen, agnihotra daily and to discharge their moral duties faithfully as described in Vedas which will enable them to differentiate between alive and non-alive matters.

So, we must know the form of vidya and avidya, simultaneously from vedas through learned acharya and not from ordinary man who is ignorant of vedas. We must make use of avidya i.e. non-alive matters like human-body etc. and vidya i.e. alive matters- the soul, to attain salvation. It is also a bitter truth that in the absence of avidya i.e. non—alive matter- the prakriti, God cannot create the world and so would be the problem with the soul, who cannot discharge his duties, cannot do worship and cannot attain knowledge in the absence of both vidya and avidya.

Therefore, to attain salvation only non-alive matters or alive matter or form of deeds or only knowledge is not required but vidya and avidya, both are required simultaneously. ***Paying attention towards the deep knowledge of this mantra, we find that avidya i.e. non-alive matters are not meant to be worshipped by soul and those who worship the non-alive matters, they are indulged in illusion; face the cycle of death and birth in different yonis and are immersed in the sea of sorrows.*** Those who have little knowledge of word-meanings, relation etc. of ved mantras but never follow eternal truth, impartial justice and on the contrary have pride, show themselves as learneds and show disrespect to vidya, they are indulged in deeper illusion. VTV

Save wealth for time of difficulty

पी.आर.मेहरा
रिटायर्ड अध्यापक
(के.वी., योल)

भस्मान्तम् शरीरम्

अविद्या, अस्मिता, राग–द्वेष, अभिनिवेश; ये पाँच क्लेश कहे गए हैं। अभिनिवेश–मृत्यु सबसे दु:खदायी क्लेश है। यह एक कटु सत्य है कि जो जन्मा है, उसे ईश्वर के नियम के अन्तर्गत एक ना एक दिन इस लोक (शरीर) को छोड़ कर जाना ही है।

सृष्टि रचना का अगर क्षणिक अवलोकन करें तो पता चलेगा कि ईश्वर की एक मात्र शक्ति से यह सारा जड़ वा चेतन संसार प्रकृति द्वारा रचा गया। सूर्य–चन्द्रमा, तारे, पर्वत, पहाड़, पेड़–पौधे, जलचर, पशु–पक्षी, हमारे, आपके, नर–नारी के सभी शरीर ईश्वर की ही तो रचना हैं। जड़ प्रकृति से रचा सारा संसार क्षण भंगुर है। उसे निश्चित ही एक ना एक दिन क्षीण होकर मृत्यु को प्राप्त होना है।

प्रकृति का नियम है कि जो भी उससे बना है उसका क्षण–प्रतिक्षण, धीरे–धीरे ह्रास हो रहा है। प्रलयावस्था में सभी रचित जड़ जगत् को नष्ट होकर ही रहना है। ईश्वर उपदेश दे रहा है कि मृत्यु–पर्यन्त इस जड़ शरीर को तुरन्त अग्नि में भस्म कर दो। इसे ही दाह–कर्म कहा जाता है। अस्थियों को बहते पानी में बहाने के अतिरिक्त अन्य कोई भी कर्म शेष नहीं रह जाता। मृत शरीर को मिट्टी में गाड़ना या दफ़नाना या फिर बहते पानी में बहाना, यह स्वयं की आस्था का विषय है परन्तु जहाँ तक वेद विद्या का प्रश्न है, वेद इसकी आज्ञा नहीं देता।

वैदिक रीति से मृत शरीर का किया गया दाह कर्म मानव कल्याण हेतु शुभ कहा गया है। यही वेद में ईश्वर की आज्ञा है। ऐसा करने से वातावरण में दुर्गन्ध–युक्त कीटाणु ना फैलकर, शुद्धिकरण होता है। जब इस जड़ शरीर से चेतन जीवात्मा निकल जाता है और यह शरीर जो पहले चेतन था, हाथ–पैर, नस–नाड़ियाँ, श्वास–प्रश्वास, सभी अंग चेतन थे, अपना–अपना कार्य कर रहे थे परन्तु जीवात्मा के निकलने के बाद, वायु–वायु में, अग्नि–अग्नि में अर्थात् प्रकृति से बने पाँचों जड़ तत्व (सूक्ष्म वा स्थूल) जिनसे यह शरीर ईश्वर ने रचा था, उसमें मिल जाते हैं। आजकल जो मृत्यु के उपरान्त कुछ वर्ग के लोगों ने यह प्रथा चला दी है कि मृत्यु पर्यन्त शरीर को अग्नि में भस्म करने के बाद कई प्रकार के क्रिया–कर्म प्रचलित कर दिए हैं– जैसे कि चौथा, दसवाँ, तेरहवाँ, सोलहवाँ फिर मासिक, छ: मासा:, बरसी (वार्षिक), चौबरसी आदि–आदि, इनका वर्णन वेदों में नहीं है। (क्रमश:)

जिस घर में स्त्री दु:ख पाती है, वह कुल शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है- मनु स्मृति

वेद मार्ग पर चलकर चित्त के कुसंस्कारों को धोएँ

वीना राज

पत्रिका वेद ईश्वरीय वाणी अंक–२, अक्तूबर २०१८–मार्च २०१९ में स्वयं लिखित लेख 'वेद मार्ग पर चलकर चित्त के कुसंस्कारों को धोएँ' को लिखते समय कुछ शब्द आत्मा से लिखे गए कि ''कि हृदय के असंख्य भाव अभी भीतर हैं, जो फट–फट कर बाहर आना चाहते हैं'' उन्हीं आत्मिक भावों को प्रकट करते हुए मैं यह बताना चाहूंगी कि स्वामी जी ने चित्त पर पड़े जन्मों के कुसंस्कारों को अपने वैदिक ज्ञान की अमृत धारा से मन साफ और शुद्ध किया है।

आज के युग में योग की बहुत ही परिचर्चा है, हर जगह योगा कक्षा, योगा जैसे शब्द सुनने को प्राय: मिलते हैं। हम भी कभी योगा कक्षा का अंग थे, योग कक्षा में योग सीखने जाते और सोचा कि बस यही योग है, परन्तु जब हम गुरु जी से योग के विषय पर बात करते तो स्वामी जी अक्सर यही कहते पहले बेटा यम और नियम पक्का करो तो अक्सर मन में प्रश्न आता यह यम और नियम क्या होता है, गुरुजी आसन की बात ही नहीं करते अपितु वह अष्टाँग योग विद्या पर हमारा ध्यान आकर्षित कराते हैं और फिर यह अष्टांग योग क्या है एक

कोतूहल सा मन में उपज जाता, परन्तु हिचकिचाहट के कारण कुछ बोल न पाते, एक दिन गुरुजी से हिम्मत जुटा कर पूछ ही लिया, गुरुजी यह अष्टांग योग क्या होता है तो गुरुजी ने ज्ञान देते हुए समझाया कि बेटा योग के आठ अंग हैं ***पहला अंग यम है और यम पांच हैं। 1. अहिंसा 2. सत्य 3. अस्तेय 4. ब्रह्मचर्य 5. अपरिग्रह और नियम के भी पाँच अंग हैं। 1. शौच 2. संतोष 3. तप 4. स्वाध्याय 5. ईश्वर प्रणिधानानि।*** पाठक विस्तार से इसके विषय में स्वामी जी द्वारा पताञ्जल योग दर्शनम् सूत्रों पर की गई व्याख्या को पढ़कर समझ सकते हैं।

इन दो अंगों को परिपक्व करने का तात्पर्य यह है कि हम आंतरिक और बाहरी शुद्धीकरण रखें; हिंसा न करें, चोरी न करें, ब्रह्मचर्य का दृढ़ता से पालन करें, ज्यादा चीजों का संचय न करें, सदा सत्य बोलें, जितना है उसमें संतुष्ट रहें, ईश्वर ध्यान में बैठें, ऋषि प्रणीत ग्रन्थों का अध्ययन करें और ईश्वर पर पूर्ण भरोसा रखें।

धीरे–धीरे इस ज्ञान को आचरण में लाना प्रारंभ किया, फ़िर स्वामी जी से आसन सीखे। स्वामी जी से आसन सीखने और आज के आसन सीखाने की शैली में ज़मीन आसमान का अंतर है। आज योगा कक्षा में दो–चार दिनों में ही सारे आसन और प्राणायाम सिखा दिये जाते हैं। स्वामी जी बड़ी मुश्किल से एक या दो आसन सिखाते और फिर कहते जाओ इसका पहले अभ्यास करो अगले आसन फिर सिखाएंगे, फिर जब कभी स्वामी जी से मिलना होता तो पहले सीखे हुए आसन उन्हें फिर से करके दिखाते और यदि उन्हें लगता आसन परिपक्व हो गया है तो अगला सिखाते, क्योंकि उनका आसन में परिपक्वता का देखना मात्र आसन द्वारा निरोग रहने का भाव न होता था अपितु शिष्य को ईश्वर प्राप्ति की सही राह दिखाना उनका मुख्य उद्देश्य रहा है, इसी तरह जीवन यात्रा में चलते–चलते करीबन दो साल में पाँच आसन सिखाये और अगले पूरे वर्ष में मात्र दो या तीन प्राणायाम वो भी एक के बाद दूसरा प्राणायाम तीन चार महीने बाद सिखाया जाता, पहले–पहले सिखाए का अभ्यास देखा जाता। बड़ी चाहत होती जैसे योगा कक्षा में इतने–इतने आसन एक साथ सिखाये

जाते हैं, हमें भी गुरुजी सिखाऐं। डर के मारे कुछ बोल न पाते, एक दिन मैने गुरुजी से साहस करके पूछ लिया गुरुजी यह योगा क्लासिस में इतने–इतने आसन सिखाए जाते हैं तो हम यह सब कब सीखेंगे, (मन में सोचा दो साल में पाँच आसन और एक वर्ष में दो या तीन प्राणायाम सिर्फ) तो गुरुजी ने बड़े प्यार से समझाया बेटा योग का अर्थ है समाधि, यानि ईश्वर को प्राप्त करना शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मात्र इतने ही आसन और प्राणायाम काफी हैं। इसके परस्पर अभ्यास से बाकी के आसन ईश्वर स्वयं अपनी शक्ति से अन्दर ही प्रकट कर देंगे, मन में सोचा कठिन मार्ग है संयमी होना पड़ेगा और डोर गुरु के हाथ में देनी होगी,

बाल्यकाल से गुरु जी के संग रहने से जान चुकी थी कि वह एक महान् ऋषि हैं, योगी हैं। अब गुरुजी जानें और ईश्वर, कि कहाँ तक पहुँच पाएँगे। परन्तु आज के योगा कक्षा के ज्ञान और गुरुजी के ज्ञान में असीम अंतर नज़र आता है। स्वामी जी के वैदिक ज्ञान देने का तरीका तो वैदिक काल की याद ही दिलाता है। अष्टांग योग के तीसरे और चौथे अंग (आसन, प्राणायाम) के विषय में मैंने विस्तार से ऊपर वर्णित कर दिया कि हमनें यह ज्ञान गुरुजी से कैसे पाया।

अब पाँचवा अंग आ गया प्रत्याहार मन सहित इन्द्रियों पर संयम ***(पतांजल योग दर्शनम् भाग–1 स्वामी राम स्वरूप योगाचार्य पेज–13),*** तो अपने जीवन काल में गुरुजी के सान्निध्य में रहते–रहते मुझे यह समझ आया कि इसके लिए विद्वान् आचार्य का बार–बार संग, उनसे बार–बार ज्ञान सुनना, अग्निहोत्र करना और कठिन अभ्यास से उनके सुने ज्ञान को आचरण में लाना/तभी प्रत्याहार परिपक्व होगा। जबकि योग क्लासिस वाले तो प्रत्याहार की कोई क्रिया नहीं

करवाते कि कैसे इन्द्रियों पर संयम आ जाये। छठा अंग आ गया धारणा– शरीरस्थ किसी भी एक स्थान जैसे नाभि, हृदय, मस्तक एवं नासाग्रे इत्यादि में वृत्ति को स्थिर करना ***(पातंजल योग दर्शनम् भाग–1, स्वामी राम स्वरूप योगाचार्य पेज–13)*** मुझे याद आता है जब हम योग कक्षा में जाते थे तो वह कहते थे अपने ध्यान को नाक के अगले हिस्से पर लगायें, हृदय पर स्थिर करें, नाभि पर लगाएँ इत्यादि तब तो हम भी ऐसा ही करते थे परन्तु गुरुजी के साथ रहते–रहते उनके दिए ज्ञान से मुझे यह समझ आया कि छठे अंग का अभ्यास कोई सरल बात नहीं क्योंकि उसके लिए उपरिलिखित पांच अंगों का परिपक्व होना और किसी महान् ऋषि की कृपा होना बहुत ज़रूरी है, तब कहीं धारणा तक इंसान पहुंच पाता है, अन्यथा बाकी तो बिना अनुभव के पढ़े, सुने रटे ज्ञान की बातें ही प्रतीत होती हैं। सातवाँ और आठवाँ अंग आ गया ध्यान और समाधि का।

इस विषय में गुरु जी ने वैदिक ज्ञान से यही बताया है कि– ध्यान और समाधि में अन्तर केवल इतना ही है कि ध्यान अवस्था में ध्याता, ध्यान एवं ध्येय का भास होता है परन्तु समाधिवस्था में केवल ईश्वर का ही भास होता है ***(पतांजल योग दर्शनम् भाग–1 स्वामी रामस्वरूप योगाचार्य जी पेज–13)।***

(क्रमश)

कर्म ना करने वाले प्राणियों की कोई जीविका भी सिद्ध नहीं होती - महाभारत-वनपर्व

Woman of Valor

Seema

We all grew up in Hindu Indian families, listening to the mythological stories of brave kings and queens, their pious characteristics played an important role in Hindu mythology.

In most of the stories, we heard mainly about only male heroes and their chivalery. Never got to hear about female heroines who played equally important role side by side. These female partners were either left out or never talked about the way they should have been portrayed in details. Today's contemporary world writers are writing about them as they learnt from old scriptures, giving their own twist to facts and actual stories.

They all were remembered together, they were either wives, queens or daughters. If we look deeply into their lives, these women had more to substance to give than what we know about them.

We have always heard about Urmila, Mandodari, Savitri, Hidimba, Sita and many more. These are few strong heroines of past each having her powerful mind and personalities. All came across as strong headed women having individual will and bravery, great convincing powers, major preservance with immense sacrifice. They all were spiritually high and devoted to their goals. Each of these women had faced the challenges of life and handled it with different outlook and intellect.

Their decisions were not influenced by anyone. We all know **Urmila's** sacrifice, when her husband Laxman left her behind to live in exile for fourteen years with his elder brother Ram and his wife Sita. It was her faith in God and her strong will power which held her to wait for fourteen years without her husband, waited patiently. She understood Laxman's devotion, respect for his elder brother. She never complained about her requirements or needs. Not even thought about her married life. We all know Urmila's character as a sacrificing heroine!

To obey the vedic preach is worship of God.

Now, the question is how relevant is this situation in our present day lives? Today's modern day woman will ever accept this situation of living without her husband for fourteen years in separation. No, never heard of!! Probably this would be against the liberalism. Even in our society today, if such situation arises nobody will encourage a woman to become "Urmila".

If we look into queen **Mandodari's** character, she was an intelligent wife of a wicked Rakshasa King, known as "Ravanna, who abducted Lord Ram's wife Sita to avenge his sister Shoorpnakha's insult.

Mandodari was an intelligent, devoted wife who continuously did her level best to dissuade Ravana from his wrong deeds. She warned him about the disastrous consequences of abducting somebody's wife. Being a righteous woman, she wanted to stop her husband from his wrong, cruel deeds. She did not just leave him but stayed on and tried to bring Ravanna on right track, whenever she got her chance!

But her "Patnidharma" was not enough to change Ravanna. If one partner is evil, other partner can try to change up to an extent beyond that it's internal will of evil person can bring change. Here again, a powerful woman played a role which is still remembered. Another mythological character in Mahabharat, we heard about, was **Hidimba** who loved Bheema. She was so devoted that she agreed to all terms of Bheem. He left her after she had a child with him. Hidimba raised her child alone, not defying her words given to Bheem.

Never ever raised for her child's rights, remain a devoted single mother forever. She was a woman of strong will power. Even in today's world, we have such strong women who are strong willed and lead their lives without any support.

We cannot just miss talking about our famous character from Ramayan, **Sita.** She was an equally strong willed, highly intelligent, a learned queen. She did not let Ravanna go away with his whims, by keeping him away from exercising her "tapa power". Even Ravann would not dare to touch her chastity. So, all mentioned women of our mythological stories had different characteristics with very different roles in life to play.

But all had one common feature that was their strong personalities, intelligence belief in God to fight all odds of life without compromising. If we look around we get to see all such women living their lives and fighting for their existence and setting examples for others to follow. They should not get influenced by any distractions or greed.

To respect, honour, obey and to be humble is called worship.

Editor's Insight

Daughter Seema, has very well tried to produce the best character of Indian women, producing the old, historical stories from the holy books like Valmiki Ramayan, Mahabharat Epic etc.

Yes, if people truly study the said granths and remember such stories in respect of brave men and women and further the women tell the same to their children, no doubt, pious impression would give good effect to the young generation to follow our traditional holy path. Then why would it not help further to make the nation strong. But it is sad that the tradition of studying vedic literature has now almost been forgotten which has further led the present generation to be involved in addiction and other activities. Amongst several such brave women who followed true vedic path while maintaining life long Brahmacharya, the name of Kunti is also remembered with all respect.

In the beginning of her married life, **Kunti** had three sons- Yudhishthir, Bheem and Arjun. She also nursed two sons of Madri named Nakul and Sehdev. It was in her young age when she started nursing the above said five sons of Pandu with the grief that her husband and Madri left for heavenly abode leaving behind Kunti alone. You see, how she nursed the five Pandavas, first in jungle and thereafter in palace by giving them vedic knowledge along with effect of brave ancestral monarchs of Pandu's tribe. All this made them outstanding, great warriors and having best character and divine qualities at that time.

See, how brave Kunti maintained her Brahmacharya till death. When she placed her eldest son Yudhishthir on the throne of the monarch of the earth, she left the kingdom with Gandhari, Dhritrashtra and Sanjay for jungle to continue her tapasya. Once, Sanjay came back to the Kingdom and gave the message of death of Dhritrashta, Gandhari and Kunti in burning fire of jungle.

So let us dig out the reason of acquiring unseen and seen divine qualities, either in men or women like Kunti. In this connection, we will find that in previous yugas, all man and women were followers of Vedas and Vedas inspire maintaining hard Brahmacharya and tapasya from childhood.

Therefore, in previous yugas, almost all persons had control over their senses and perceptions whereas nowadays, the study of vedas has been neglected and hence the problem. In previous yugas, people used to follow the teachings of Vedas based on which, they used to enjoy long, happy life without any disease, tension, violence or any problem etc.

For example- **Yajurved 19/30** preaches that the male/female child who by maintaining Brahmacharya, true speech etc. get deeksha, vedic preach, good education and pious intellect, then from the said pious qualities, he gets "Dakshinnaam" i.e. prosperity and wealth, from the said he attains "Shradhaam" i.e. desire to maintain eternal truth and at last from Shraddha, he realises truth. The idea of the mantra is this that nobody can get true path and even cannot leave falsehood until he maintains the above quoted good qualities.

Service to a learned Acharya enables aspirant to attain vedic knowledge. (Manu Smriti)

People of previous yugas used to maintain above quoted divine qualities right from beginning of childhood and maintained them entire life like in case of Kunti. I remember one more event that there was a lady named Bhamati in the old times. As per tradition, she was married to Misraji in childhood. Time laboured on and she attained her young age, when her parents also died. She reached her husband's residence at last. She saw that her husband lived in simple hut and he was keenly writing a book.

Bhamati used to do every service including managing food for her husband. After a long time, what happened that as usual, she was sitting on ground and her husband was keenly writing the book. It was night time. Immediately, oil of lamp got finished and flame extinguished.

Bhamati ran to get the oil but, in between, in the light of moon which was coming from the broken roof of the hut, Misraji saw her. Misraji asked, who she was? Bhamati told that she was his wife. Misraji answered that he was not married and he had never seen her.

On this Bhamati made Misraji remember that he was a child and even on the occasion of marriage he was holding Sanskrit grammer granth-Ashtadhyayee in his hand and was busy in learning grammer sutras. So Misraji tried to remember and at last he remembered that he was married with the lady. Misraji asked that since how long she was there. Bhamati replied that she had come to him when she was young lady and at present, she had crossed seventy years of age.

Misraji asked as to why could he not remember his marriage or her stay with him for so many years. Bhamati replied that all matters of world are recognised by sense organs with the help of mind and intellect. She said to Misraji that his mind and intellect were deeply busy in writing book and swadhyaye of Vedas. So, he could not notice her staying with him.

Then Misraji asked that how did she manage the financial resources to live upon? She replied that she knew the art of singing, dancing etc. She taught the art of singing etc. to the needy girls and thus she managed the source of income to live upon. Misraji felt ashamed. He told such management should have been done by him. He was sorry for not discharging his duties. He then started slowly walking towards his wife to embrace her but immediately Bhamati moved back and prayed to her husband not to touch her. She in respective manner told her husband that for last several years, she had been sitting on the ground at his feet and had tasted the utmost divine merriment of maintaining Brahmacharya. She requested her husband not to break her Brahmacharya. Misraji came back and sat on his seat. Then asked her about her name. She told that her name was Bhamati. Misraji had completed his granth but was only thinking to give title to his book. He then happily named his granth as Bhamati. Now, it is sad that in the absence of spreading knowledge of all Vedas door to door, the above quoted divine preach is not being listened and is not being followed and hence the problem.

VIV

बात जो दिल को छू गई

—शीतल गुप्ता

स्वामी राम स्वरुप जी योगाचार्य, हमारे पूजनीय गुरु जी, योल कैंट हिमाचल में रहते हैं। वह सबसे अलग हैं। वह धरती पर ईश्वर की पहचान हैं, ईश्वर का वरदान हैं। उनके बारे में कुछ भी लिखना, शब्दों की, कलम, कागज़ की बात नहीं है। वह ईश्वर भक्ति में ही लीन रहते हैं। चेहरे पर ईश्वर भक्ति का नूर ही नूर है। दुनिया की चमक–दमक उन्हें भाति नहीं। चारों वेद उनके अन्दर प्रकट हैं। वह धरती पर ईश्वर का स्वरुप हैं। मैं यह इसलिए नहीं कह रही कि वो हमारे गुरु जी हैं, मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि वह ब्रह्म ऋषि हैं। उनके पास तो बस ब्रह्म ही ब्रह्म है।

गुरु जी कहते हैं मनुष्य जीवन बार–बार नहीं मिलता इसलिए कहीं मनुष्य ही बन कर न रह जाएँ– वैदिक विद्या हासिल कर के देव बनो, देवी बनो। गुरु जी यह भी कहते हैं– ज्ञान दिए बिना ज्ञान नहीं होता। इसलिए ज्ञान प्राप्त करने के लिए वेदों के विद्वान् के पास जाना चाहिए।

वैदिक ज्ञान जिस रूप में भी मिले, पुस्तक या सी.डी., उसे ग्रहण करना चाहिए। गुरु जी ने वैदिक ज्ञान से भरी 40 से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं और सी.डी. भी बनाई हैं। सी.डी. में भजनों और प्रवचनों की सहायता से गुरु जी ने वैदिक ज्ञान का भण्डार समाज को दिया है। कोई भी सी.डी. सुनो तो लगता है यह सबसे अच्छी है। हर एक सी.डी. एक से बढ़ कर एक है, ज्ञान से भरी हुई।

गुरु जी की सी.डी. संत वाणी भाग १ में भजन है–

रे मन ये दो दिन का मेला रहेगा,

कायम न जग का झमेला रहेगा।

इस भजन के प्रवचन की बात सच दिल को छू गई।

१) गुरु जी ने कहा– ऐसा भी नहीं है कि हमने जाना नहीं है।

२) ऐसा भी नहीं कि जो धन कमाया है वो साथ लेकर जाना है।

३) ऐसा भी नहीं जो धन, सोना–चाँदी आदि छोड़कर जाएँगे उसके मालिक हम अगले जन्म में आकर हो जाएँगे। इनमें से कुछ भी नहीं होगा तो फिर –

१) क्यों हम अंहकार, मान–अपमान, छोटा–बड़ा, तेरा–मेरा में फंसे हैं?

२) क्यों मोह–ममता में फंसे हैं?

३) क्यों धन का घमण्ड करते हैं, धन को कमाने के लिए कई प्रकार के पाप करते हैं।

४) क्यों अपनों से वैर करते हैं ?

५) क्यों नहीं सोचते कि जाना है एक दिन?

गुरु जी यह नहीं कहते कि धन न कमाओ, वह कहते हैं ***आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति, साथ–साथ करें।*** कहीं धन कमाने में इतने मग्न न हो जाएँ कि नाम स्मरण और यज्ञ छूट जाएँ। नाम स्मरण और यज्ञ नहीं छूटने चाहिए।

सच गुरु जी की प्रवचन की बातें इतनी दिल को छू गईं, लगता है बहुत समय बीत गया इस बात को समझ आने में कि ईश्वर से प्यार करें और दुनिया से व्यवहार। अक्सर हम दुनिया से प्यार करते हैं और कितनी बार सुबह, शाम की संध्या कम कर देते हैं, दुनिया के कार्यों के लिए। यह दुनिया किसी की सगी नहीं है, मतलबी है।

कभी–कभी लगता है, भौतिकवाद की उन्नति में कहीं आध्यात्मिकवाद की पहली कक्षा में तो नहीं रह गए। बहुत समय बीत गया इस बात को समझ आने में कि ईश्वर के घर जाने का सामान इकट्ठा करना है– नाम स्मरण, यज्ञ, योगाभ्यास, माता–पिता की सेवा, बड़ों का आदर–मान, मधुर वाणी बोलना, आदि।

जब तक हम किसी वैदिक आचार्य की शरण में नहीं जाएँगे, वैदिक ज्ञान नहीं सुनेंगे तब तक यह करना सरल नहीं है। आओ लौट चलें उस ओर जहाँ मुनि वेद सुनाते हैं।

VIV

गुणों में दोष देखने वाला, वैर भाव रखने वाला शीघ्र ही महान् कष्ट पाता है - विदुर नीति

वज्रासन

स्वामी रामस्वरूप 'योगाचार्य'

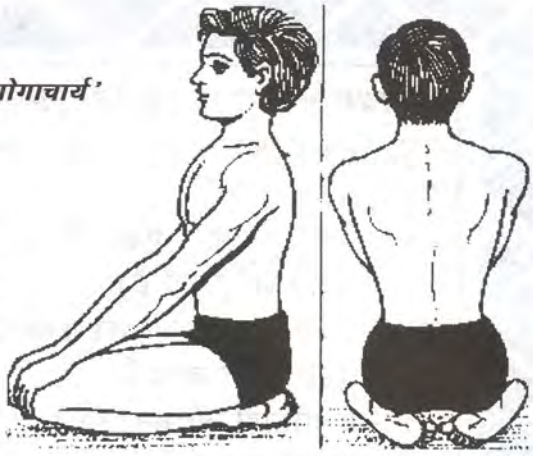

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि वर्तमान काल में पवित्र योग शब्द की परिभाषा विकृत कर दी गई है। अष्टाँग योग में तीसरा अंग आसन है। अत: इस तीसरे अंग अर्थात् आसन के अभ्यास को योगासन कहते हैं, योग नहीं कहते। परन्तु आज योगासन को ही योग कहा जा रहा है और इस प्रकार अनादि एवं अविनाशी अष्टाँग योग विद्या, जिसकी उत्पत्ति वेदों से है, उसको भी विकृत रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। योग अलग है और योगासन अलग है। पतांजलि ऋषि कृत योगशास्त्र के दूसरे सूत्र के अनुसार योग शब्द का अर्थ है— समाधि। जब हम अष्टाँग योग की साधना करते हैं, तब समाधि तक पहुँचते हैं। योगासन की इस श्रृंखला में हम यहाँ वज्रासन का वर्णन कर रहे हैं:—

विधि

१) दोनों जाँघें और दोनों पिंडलियाँ, इनको ऊपर—नीचे बराबर करके और दोनों पाँव के तलवों को गूदा के दोनों ओर बराबर बैठा कर, बैठें।

२) घुटने के निचले भाग को और पाँव की उंगलियों तक के भाग को भूमि से स्पर्श करें। इसी को वज्रासन कहते हैं।

लाभ

१) जैसा कि नाम से विदित है, इस आसन के लगाने से शरीर वज्र के समान सुदृढ़ हो जाता है।

२) इसके लगाने से पैरों और पेट को लाभ होता है।

३) इससे वात् अर्थात् वायु का रोग नष्ट होता है।

४) यह आसन पाचन शक्ति बढ़ाता है।

५) इसके नित्य अभ्यास द्वारा खुलकर भूख लगती है।

VIV

जो मनुष्य आलसी बनकर सोता रहता है, उसे दरिद्रता प्राप्त होती है- महाभारत-वनपर्व

Saffron

Sugandh 'Sudhi'

I used to wonder that how a pinch or two three threadlike red stigmas of saffron (kesar) can add such yellow hue to the food items till I started using myself this precious – expensive spice. To my surprise and delight this world's most legendary spice (as called commonly) is awesome. It is used for both its royal color and delicate aroma.

Saffron is not only rich in flavor and great food coloring agent but also possess great Ayurvedic Medicinal properties as this is the most important herb in the world. In Ayurveda, saffron is considered as 'Tridoshic' i.e., balancing for all doshas.

The saffron plant is flowering perennial herb. The flowers are purple in Color. Each flower of saffron produces only three threads of saffron, and it blooms for only one week every year. The saffron is harvested by hand to protect the delicate stigmas inside. ***Approximately 1,000 flowers produce just one ounce of saffron only.*** Saffron spices is one among the costliest herbs used in Ayurveda and even in Unani medicinal preparations.

Saffron has been used throughout the world as medicinal herbs and food coloring agent. Saffron is generally used in cooking, medicine preparations and beauty products. In food items, saffron is used extensively whether it is Ladoo, Rabdi, Rasmalai, Kalakand ,Malai kulfi, Rasgula, Biscuits, Syrup, Jalabi, Tea, Milk, ice-cream,Rice, etc.,

Benefits in excretory system

Saffron has Antioxidant, Anti-nociceptive and Anti-inflammatory properties that help to boost the process of the excretory system. Saffron benefits in easy flow of urine and therefore, used in restraining of urine.

Benefits in skin care

Saffron can be the best natural remedy that

benefits skin because of many vitamins and antioxidant's properties. It also has the anti-inflammatory characteristic that soothes skin. In addition, it has anti-fungal character that helps to treat acne. Due to characteristic properties, saffron lighten and hydrate the skin making it soften and give skin a fresh glow. Saffron is a natural toner when mixed with rose water and applying over the skin - can reduce oiliness and improves skin texture. Saffron beneficial in reducing dark colors ace and pimple and dark circles under eyes. It helps to gain fairness and glow of skin.

It promotes digestive health

Saffron is a home remedy and is used since ancient times for different digestive ailments as well as gastro intestinal disorders. The antioxidant effects, genoprotective property, radical scavenging and anti-inflammatory processes help in enhancement of appetite and digestion. Saffron is also helpful in acidity and gastrointestinal acidity problems. saffron or Kumkuma helps to increase hunger. It additionally lowers indigestion, vomiting, diarrhea, and acidity.

It boost Central Nervous System

Saffron is an herb that has found useful in many elements beside nervous system. In simple words, the antidepressant properties of saffron boost central nervous system. The Anti-depression properties of saffron boost memory and stimulate nerve system and change the mood change in condition of insomnia. Some researchers indicate that saffron is powerful and effective as taking a low-dose prescription of antidepressant drug such as Imipramine and Fluoxetine. Saffron is used as an active ingredient in ayurvedic safeguards for diseases of the central nervous system. Saffron with milk can serve is a great source of calcium and proteins.

Good for Rheumatic Arthritis: Saffron is very effective in arthritis.

Best for our Circulative system: Saffron is used as a cardiac tonic. Moreover, also used to treat diseases that result from vitiation of blood.

The purpose of these articles is to provide information about the herb saffron only. This information is not intended for use in the diagnosis, treatment, cure or prevention of any disease. Check with your doctor before taking this herbs or using it for any disease. VTV

Wishing you a
Happy
Baisakhi
DIVINE
... Daily Needs Store
SHOP No. 8, SHIV MANDIR SHOPPING COMPLEX,
GANDHI NAGAR, JAMMU - 180004 (J&K). Contact : 0191-2456777

HUMANAL HARMONY
Collective Divine Inspiration
GLOBAL MESSAGE
deedee
• COMPLETE OFFSET PRINTING SOLUTION AND MFG OF EXCLUSIVE CARDS & BOXES WITH COMPLETE IN-HOUSE FACILITY INCLUDING DESIGNING & CTP PROCESSING.
• COMPLETE BINDING SOLUTIONS AND MFG. OF PAPER CARRY BAGS & ENVELOPS.
• COMPLETE PACKAGING INDUSTRY FOR MFG. OF MONO CARTONS, LABELS & OTHER PACKAGING MATERIALS.
dee dee reprographix - 3, AIKTA ASHRAM, NEW REHARI, JAMMU.
PH. : 2543038, 94191 08620, 99061 39999 e-mail : deedeereprographix@gmail.com
dee dee experts - 17-A, NEW REHARI, JAMMU.
PH. : 99061 39999 e-mail : deedeeexperts@gmail.com
dee dee packaging industries - LANE No. 4, PHASE II, SIDCO INDUSTRIAL COMPLEX, BARI BRAHMANA, J&K. PH. : 01923-222949, 94191 81240 e-mail : pi.deedee@gmail.com
Happy Baisakhi

NARSINGH
STONE CRUSHER

Specialised in Railway Blast 65mm

Deals in : Washed Sand,
10mm, 20mm, 40mm, aggregate

TARNAH NALLAHA, DAYALACHAK, JAMMU (J&K)
Mob. : 9419208007

VED MANDIR PRAKASHAN

PUBLICATIONS BY : SWAMI RAM SWARUP 'YOGACHARYA'

S.No.	Books in Hindi	Price
1.	आत्मिक उद्‌गार	51.00
2.	मानव धर्म शिक्षा (Revised Edition)	100.00
3.	दिल से दिल की बात	21.00
4.	मृत्यु-एक कटु सत्य	20.00
5.	भजन कीर्तन	40.00
6.	संध्या मंत्र - भाग 1 (Revised Edition)	50.00
7.	ब्रह्मचर्य दुःख निवारक दिव्य मणि	100.00
8.	वैदिक प्रवचन संग्रह - I	120.00
9.	वैदिक प्रवचन संग्रह - II	120.00
10.	पताञ्जल योग दर्शन - I	131.00
11.	पताञ्जल योग दर्शन - II	300.00
12.	यज्ञ कर्म सर्वश्रेष्ठ ईश्वर पूजा	65.00
13.	श्रीमद् भगवद् गीता - एक वैदिक रहस्य - प्रथम भाग	400.00
14.	श्रीमद् भगवद् गीता - एक वैदिक रहस्य - द्वितीय भाग	400.00
15.	श्रीमद् भगवद् गीता - एक वैदिक रहस्य - तृतीय भाग	250.00
16.	श्रीमद् भगवद् गीता - एक वैदिक रहस्य - चतुर्थ भाग	400.00
17.	वैदिक प्रश्नोत्तरी	30.00
18.	नारी दुष्कर्मियों पर वेदों द्वारा दण्ड	25.00
19.	वेदों से मृत्यु रहस्य जानो	140.00
20.	संध्या मंत्र- भाग 2	10.00
21.	गायत्री मंत्र साधना New	100.00
22.	रसना झरे - वैदिक काव्य	150.00
23.	वेदों से झरता सनातन सत्य	250.00

S.No.	Books in English	Price
1.	Yoga: A Divine Vedas Philosophy	65.00
2.	Vedanta & Eternal Vedas Philosophy -I	31.00
3.	Vedanta & Eternal Vedas Philosophy-II	20.00
4.	Protect the Holy Cow, Say Vedas	40.00
5.	Vedas A Divine Light -I	250.00
6.	Vedas A Divine Light -II	121.00
7.	Vedas A Divine Light -III	100.00
8.	Vedas A Divine Light -IV	100.00
9.	Vedas A Divine Light -V	140.00
10.	Vedic Punishment for Criminals (Women Offenders)	25.00
11.	Bhagwad Geeta is related to Vedas	25.00
12.	Vedas Destroy Illusion New	120.00

S.No.	CD's		Price
1.	Vedon Kee Chhawon Mein	(1-2 VCDs)	55.00
2.	Ishwar Kee Awaz Suno	(ACD)	36.00
3.	Sab Mein Vyapak Jyoti Ek	(ACD)	36.00
4.	Sant Vanni	(1-4 ACD)	35.00
5.	Bhakti Ras	(VCD)	40.00
6.	Shri Ram Katha Gaayan I	(ACD)	35.00
7.	Ishwar Bin Sukh Naahin	(ACD)	36.00
8.	Sarvavyapak Ishwar Mahima Suno	(ACD)	36.00
9.	Sab Gobind Hai	(ACD)	45.00
10.	Amrit Vani Ved	(ACD)	36.00
11.	Bhaj Govindam	(ACD)	35.00
12.	Ved Vanni Updesh	(ACD)	39.00
13.	Prabhu Sa Koi Na Duja	(ACD)	39.00
14.	Prabhu Ko Na Bhuley New	(ACD)	36.00

S.No.	Cassettes		Price
1.	Sant Vanni	(VOL. 1-8)	35.00
2.	Bhaj Govindam		35.00

S.No.	Books in Other Languages	Price
1.	Vedas - Divine Light- I (कन्नड़ भाषा)	120.00
2.	Vedas - Divine Light- II (तमिल भाषा)	120.00
3.	Vedas - Divine Light- III (तमिल भाषा)	100.00
4.	Protect the Holy Cow (तमिल भाषा)	50.00
5.	नारी दुष्कर्मियों पर वेदों द्वारा दण्ड (गुजराती भाषा)	35.00
6.	गायत्री मंत्र (तमिल भाषा)	12.00
7.	Vedas - Divine Light- I (गुजराती भाषा)	120.00
8.	Vedas - Divine Light- I (मराठी भाषा)	120.00
9.	नारी दुष्कर्मियों पर वेदों द्वारा दण्ड (तमिल भाषा)	30.00
10.	Vedas - Divine Light- I (तेलगु भाषा)	140.00
11.	Vedanta & Vedas Eternal Philosophy I & II (तमिल भाषा)	80.00

www.vedmandir.com

BUILD YOUR GLOBAL CAREER

POST GRADUATE PROGRAMS FROM LEADING INDIAN & GLOBAL INSTITUTES

Ivory Education offers world-class programs using e-learning & physical learning in your city

MICA THE SCHOOL OF IDEAS

STEINBEIS · UNIVERSITY · BERLIN ·

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT CALCUTTA

IIT Delhi

IMT Institute of Management Technology Ghaziabad

IVORY EDUCATION

For details, free application form & brochures, visit:

www.ivoryeducation.com